CCI NG 3.7 Product: DelhiMasalamixBS PubDate: 11-02-2026 Zone: TIMSGhaziabad Edition: 1 Page: HDGZFP User: cci Time: 02-10-2026 23:13 Color:

रानी बोली, आमिर, शाहरुख और सलमान के अंदाज जुदा, पर जुनून एक p4

NBT
गाज़ियाबाद Times OF INDIA
नवभारत टाइम्स । गाजियाबाद । बुधवार, 11 फरवरी 2026

खो-खो स्पर्धा में तृतीय रहने पर सम्मानित P2

हेल्पलाइन नंबर 24/7

पुलिस कंट्रोल रूम
0120-2820758
ट्रैफिक कंट्रोल रूम
9643322904
नगर निगम गाजियाबाद हेल्पलाइन नंबर-टोल फ्री नंबर
1800 1803 012
विद्युत विभाग इमरजेंसी
9193320115
डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल इमरजेंसी
8826294546
फायर कंट्रोल
0120-2777102
9454418348

फटाफट खबरें

अडिशनल सीपी ने संभाला चार्ज

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : नवनियुक्त अतिरिक्त पुलिस आयुक्त राज करन नैय्यर ने मंगलवार को चार्ज संभाला। पुलिस आयुक्त जे. रविन्दर गौड और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त मुख्यालय व अपराध केशव चौधरी ने उनका स्वागत किया। अडिशनल सीपी लॉ एंड ऑर्डर व यातायात आलोक प्रियदर्शी के ट्रांसफर के साथ 2012 बैच के आईपीएस राज करन नैय्यर को गाजियाबाद का अतिरिक्त पुलिस आयुक्त बनाकर भेजा गया है। गाजियाबाद में उन्हें अडिशनल सीपी लॉ एंड ऑर्डर व यातायात की जिम्मेदारी दी गई है। यहां से पहले वह गोरखपुर एसएसपी समेत कई जिलों के कप्तान रह चुके हैं।

उगाही में फर्जी CBI अधिकारी हिरासत में

■ NBT रिपोर्ट, मसूरी : मसूरी क्षेत्र में खुद को सीबीआई अधिकारी बताकर कीटनाशक व बीज भंडार का व्यापार करने वाले एक व्यापारी को कार्रवाई का डर दिखाकर 90 हजार रुपये ठगने का मामला सामने आया है। 10 फरवरी को व्यापारी को जब आरोपी मसूरी चौराहे पर दिखाई दिया तो व्यापारी ने लोगों की मदद से उसे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। मसूरी निवासी शाहिद अली ने बताया कि उसकी किसान कीटनाशक व बीज भंडार की दुकान है। कुछ दिन पहले एक व्यक्ति दुकान पर आया और खुद को सीबीआई अधिकारी बताकर जेल भिजवाने की धमकी देकर 90 हजार रुपये वसूल लिया। आरोपी की पहचान हापुड़ के गांव रिझवड़ निवासी सद्दाम के रूप में हुई है।

डॉक्टर पर युवती से छेड़छाड़ का आरोप

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : इंदिरापुरम स्थित एक डेंटल क्लिनिक के चिकित्सक पर दिल्ली निवासी एक युवती ने छेड़खानी का आरोप लगाया है। दिल्ली निवासी युवती का कहना है कि छह जनवरी को इंदिरापुरम के शिप्रा मॉल गई थी। इसके बाद वह रूटीन डेंटल क्लीनिक में गई थी। आरोप है कि वहां पर डॉ. रजनीश ने उसके साथ छेड़खानी की। चिकित्सक ने उसे गलत तरीके से छुआ। युवती ने शोर मचाते हुए विरोध किया तो चिकित्सक ने मारपीट करते हुए धक्का देकर गिरा दिया।

फरार बदमाश पर 20 हजार का इनाम

■ NBT न्यूज, हापुड़ : थाना पिलखुवा क्षेत्र के नेशनल हाईवे-9 पर हुई 85 लाख रुपये की लूट में फरार बदमाश पर पुलिस ने 20 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। हाईवे पर 15 दिसंबर को 85 लाख रुपये की लूट हुई थी, जिसमें सात आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। थाना लोनी बार्डर क्षेत्र की मौलाना आजाद कॉलोनी बेहटा हाजीपुर निवासी इरशाद पर इनाम घोषित किया गया है।

रिश्वत लेने के आरोप में कर्मचारी निलंबित

■ NBT न्यूज, लोनी : ट्रॉनिका सिटी में यूपीसीडा कार्यालय में तैनात एक कर्मचारी के घूस लेने के मामले में आरोपी कर्मचारी को निलंबित कर दिया गया। बता दें कि प्लॉट ट्रांसफर के नाम पर 17 हजार की घूस लेते हुए कर्मचारी की विडियो सामने आया था।

हमारा पता
एनबीटी गाजियाबाद
13/1, साहिबाबाद
इंडस्ट्रियल एरिया, साइट- 4
email: nbtreader
@timesofindia.com

फॉर्च्युनर सवार युवकों ने किया पूर्व मंत्री पर हमला

वैवाहिक समारोह से लौट रहे थे, फायरिंग का प्रयास, तमंचे में फंसी गोली

■ NBT न्यूज, हापुड़

गढ़ से तीन बार विधायक रहे और पूर्व मंत्री मदन चौहान पर सोमवार देर रात उस समय हमला हुआ जब वह एक वैवाहिक कार्यक्रम से लौट रहे थे। हापुड़-दिल्ली बाईपास रोड पर हिरणपुरा के पास रोड किनारे फॉर्च्युनर को खड़ा कर तीन युवकों ने उनकी इनोवा गाड़ी रोकने का प्रयास किया। गाड़ी धीमी हुई तो बदमाशों पर उन्हें टारगेट करते हुए गोली चला दी। हालांकि, गोली मिस हो गई। जब तक बदमाश दूसरी गोली चलाने का प्रयास करते चौहान के साथ मौजूद सुरक्षा कर्मी अपनी गन लेकर तेजी से नीचे उतरा। इसे देख हमलावर फॉर्च्युनर में सवार होकर फरार हो गए। बाद में चौहान ने पूरे घटनाक्रम की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने फॉर्च्युनर के नंबर के आधार पर गाड़ी मालिक को गिरफ्तार कर लिया। वह गाजियाबाद में मोबाइल फोन का कारोबार करता है। उसका कहना है कि उसकी गाड़ी उसका भांजा इस्तेमाल करता है, जो हापुड़ में प्रॉपर्टी का कारोबार करता है। पूर्व मंत्री पर हमला क्यों किया गया, इस बारे में पुलिस ने कोई ठोस जवाब नहीं दिया।

नोएडा में रहने वाले पूर्व मंत्री मदन चौहान सोमवार को गढ़ के ब्रजघाट में एक वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। रात करीब 9:30 बजे उन्हें अपने एक परिचित जितेंद्र कुमार के यहां हिरणपुरा जाना था। वह मेरठ-हापुड़ बाईपास रोड से गांव के पास पहुंचे। वहां फॉर्च्युनर गाड़ी से उतरकर खड़े तीन युवकों ने उन्हें रुकने का इशारा किया। चौहान ने बताया कि उन्होंने सोचा कि कोई मिलने वाला होगा। गाड़ी धीमी होते ही एक युवक ने उन पर निशान साधते हुए तमंचे से गोली चला दी। हालांकि, गोली मिस हो गई। इस बीच दूसरे युवक ने गोली चलाने का प्रयास किया। इसी दौरान गनर ने मोर्चा लिया और उसने दो हवाई फायर किए। इसके बाद तीनों आरोपी फॉर्च्युनर में सवार होकर मौके से फरार हो गए।

गनर के मोर्चा लेने पर भागे हमलावर, उसने दो राउंड हवाई फायर किए

गाजियाबाद निवासी गाड़ी मालिक कारोबारी को गिरफ्तार किया गया

उसने बताया, उसका भांजा उसकी गाड़ी इस्तेमाल करता है, हमले का कारण स्पष्ट नहीं

AI image

इसी गाड़ी से आ रहे थे पूर्व मंत्री

मदन चौहान

एएसपी विनीत भटनागर ने बताया कि मुख्य आरोपी सूर्या चौहान समेत अन्य की तलाश की जा रही है। मामला रोडरेज या फिर शराब के नशे में हो सकता है।

पहले भी खनन माफिया कर चुके हैं हमला

गौरतलब है कि मदन चौहान की पहचान कद्दावर नेताओं में होती है। वह लगातार तीन बार गढ़मुक्तेश्वर सीट से विधायक रह चुके है। समाजवादी पार्टी की अखिलेश सरकार में उन्हें राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार सौंपा गया था। 2017 में वह भारतीय जनता पार्टी के मौजूदा विधायक कमल मलिक से पराजित हो गए थे। पूर्व मंत्री ने अपनी सुरक्षा को लेकर गंभीर खतरा बताया है। इससे पहले भी मदन चौहान पर खनन माफिया द्वारा तीन बार हमला किया जा चुका है। नोएडा में रहने के बाद भी वह अपने विधानसभा क्षेत्र में काफी सक्रिय रहते हैं। पुलिस सभी एंगल से जांच कर रही है।

मदन चौहान पर हमले की सूचना से पुलिस महकमे में मचा हड़कंप

घटना की जानकारी मदन चौहान ने पुलिस को दी। मामला हाईप्रोफाइल होने की वजह से कुछ देर में ही बड़ी संख्या में पुलिस मौके पर पहुंच गई। पूरे क्षेत्र की नाकेबंदी कर जांच की गई, लेकिन बदमाशों का सुराग नहीं मिला। जांच में पता चला कि फॉर्च्युनर का नंबर गाजियाबाद का है। उस पर यूपी-14 -870 लिखा हुआ था, जबकि बीच के अक्षर पर मिट्टी लगी थी। जांच के आधार पर गाड़ी मालिक गाजियाबाद के इटैड़ा निवासी राजकुमार चौहान को गिरफ्तार किया गया। वह मोबाइल फोन का कारोबार करता है।

पिकअप चालक को बचाने में DME पर 2 ड्राइवरों की मौत

DME पर खड़े ट्रक से पिकअप टकराई, ड्राइवर गाड़ी में फंसा

उसे फंसा देख दूसरे ड्राइवरों ने मदद की

■ NBT रिपोर्ट, नोएडा : सेक्टर-62 के पास दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर सोमवार देर रात एक के बाद एक हुए सड़क हादसों ने दो लोगों की जान ले ली, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन लोगों की मौत हुई, वे खुद किसी की जान बचाने के लिए रुके थे। पहले एक पिकअप गाड़ी और ट्रक में टक्कर हुई थी। पिकअप ड्राइवर गाड़ी में फंस गया, उसे निकालने के लिए तीन ट्रक ड्राइवर सामने आए। तभी एक तेज रफ्तार में ट्रक आई और पांच से छह लोगों को रौंद दिया। दो ड्राइवरों की मौत हो गई। सेक्टर 58 थाने की पुलिस ने आरोपी चालक को हिरासत में लिया है। एडीसीपी मनीषा सिंह ने बताया कि सेक्टर-62 के पास दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर मेरठ से दिल्ली की ओर आने वाली बीच की लेन में एक सड़क दुर्घटना हुई थी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची। मौके पर पहुंचकर पुलिस ने देखा कि एक पिकअप वाहन पीछे से एक ट्रक से टकरा गया था। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि पिकअप का ड्राइवर अमित वाहन के अंदर बुरी तरह फंस गया था और बाहर निकलने निकल नहीं पा रहा था।

लगा लंबा जाम

हादसे के बाद दिल्ली-मेरठ हाइवे पर लंबा जाम लग गया। कई किलोमीटर तक वाहनों की कतारें लग गईं। स्थिति को संभालने के लिए पुलिस ने एनएचएआई की टीम की मदद से दुर्घटनाग्रस्त ट्रकों को सड़क से हटवाया और सुरक्षित स्थान पर खड़ा कराया। इसके बाद जाकर यातायात धीरे-धीरे सामान्य हो सका। पुलिस ने हादसे के आरोपी सब्जी से लदे ट्रक के चालक को हिरासत में ले लिया है। आरोपी ट्रक को भी थाना सेक्टर-58 पुलिस ने कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

इलाज के बाद मिली छुट्टी : पिकअप चालक अमित के शरीर ऊपरी हिस्से पर चोट आई है। गाजियाबाद के एक अस्पताल में इलाज के बाद उसे डॉक्टरों ने छुट्टी दे दी।

पिकअप में फंसे चालक को निकालते वक्त हुआ हादसा

हादसे को देखकर पीछे से आ रहे तीन ट्रक चालकों ने इंसानियत दिखाते हुए अपने-अपने ट्रक सड़क किनारे खड़े कर दिए और पिकअप में फंसे ड्राइवर को बाहर निकालने की कोशिश में जुट गए। इसी दौरान अचानक पीछे से आ रहा एक तेज रफ्तार सब्जी से लदा ट्रक तेज रफ्तार और लापरवाही से सड़क किनारे खड़े उन तीनों ट्रक चालकों को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि तीनों चालक दूर जा गिरे।

दो घायलों की हालत गंभीर

हादसे में घायल तीनों ट्रक चालकों को तुरंत पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया। इलाज के दौरान देवेंद्र (34) निवासी जिला शाहजहांपुर और गोविंद चौहान (35) निवासी फतेहपुर ऐरावाला जनपद आजमगढ़ की मौत हो गई। वहीं हादसे में घायल वीरेंद्र (24) शाहजहांपुर, साहिल जनपद बागपत और हरिओम (35) निवासी मंगोलपुरी दिल्ली का अस्पताल में इलाज चल रहा है। वहीं घायल वीरेंद्र और हरिओम की हालत गंभीर बनी हुई है। साहिल को मामूली चोट आई है।

बच्ची का यौन उत्पीड़न, 20 साल कैद

पॉक्सो कोर्ट ने पड़ोसी पर लगाया 50 हजार रुपये का जुर्माना

■ NBT न्यूज, आरडीसी

लिंक रोड थाना क्षेत्र में चार साल की मासूम बच्ची से यौन उत्पीड़न में कोर्ट ने पड़ोसी को 20 साल की सजा सुनाई। उस पर 50 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया गया। पॉक्सो कोर्ट में मंगलवार को सजा पर सुनवाई के बाद विशेष न्यायाधीश नीरज गौतम ने यह फैसला सुनाया। इससे एक दिन पहले कोर्ट ने आरोपी को दोषी करार दिया था।

विशेष लोक अभियोजक हरीश कुमार ने बताया कि मामला लिंक रोड थाना क्षेत्र का है। 28 जनवरी 2023 को पीड़िता की मां ने लिंक रोड थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। महिला के अनुसार, उसकी चार वर्षीय बेटी घर के बाहर खेल रही थी। इसी दौरान उसका पड़ोसी सोमी वहां पहुंचा और उसे अपने साथ घर में ले गया, जहां उसने बच्ची के साथ गलत काम किया। काफी देर तक बच्ची के नजर नहीं आने पर मां ने उसकी तलाश की। कुछ समय बाद बच्ची रोती हुई घर पहुंची और मां को घटना की जानकारी दी। इसके बाद महिला ने थाने में तहरीर दी। छानबीन के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। तब से यह मामला विचाराधीन था।

सुनवाई के दौरान कोर्ट में पेश साक्ष्यों और गवाहों के बयानों के आधार पर आरोपी को दोषी पाया गया। सजा के प्रश्न पर सुनवाई के बाद मंगलवार को कोर्ट ने दोषी सोमी को 20 साल की सजा सुनाई। साथ ही उस पर 50 हजार रुपये के जुर्माना लगाने का आदेश दिया।

AI image

1. साहिबाबाद के लिंक रोड थाना एरिया का है मामला
2. जनवरी, 2023 में पीड़िता के साथ गलत हरकत की गई थी
3. सोमवार को कोर्ट ने पड़ोसी को दोषी करार दिया था

रोड टैक्स नहीं दिया, 11 हजार वाहन मालिक रडार पर

पांच साल से टैक्स नहीं देने वालों पर लिया जाएगा सख्त एक्शन

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : परिवहन विभाग ने कमर्शल वाहनों का रोड टैक्स जमा नहीं करने वालों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की तैयारी की है। जिले में करीब 11 हजार से ज्यादा ऐसे वाहन मालिक चिह्नित किए गए हैं, जिन्होंने पिछले 5 साल या उससे अधिक समय से एक रुपया भी टैक्स जमा नहीं किया है। इससे सरकारी खजाने को करीब 10 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ है। एआरटीओ प्रशासन अशोक कुमार श्रीवास्तव ने साफ चेतावनी दी है कि यदि अगले 15 दिनों के भीतर इन वाहन मालिकों ने टैक्स जमा नहीं किया तो उनके खिलाफ रिकवरी सर्टिफिकेट (RC) जारी करने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। यह आरसी सीधे जिला प्रशासन को भेजी जाएगी, जिसके बाद प्रशासन वसूली के लिए सख्त कदम उठाएगा। इसमें वाहन की कुर्की से लेकर जेल तक की नौबत आ सकती है। हालांकि विभाग ने एक मौका दिया है कि यदि आपका वाहन कबाड़ हो चुका है या चलने की स्थिति में नहीं है, तो इसकी जानकारी विभाग को जुर्माने और टैक्स से बच सकेंगे।

बकाया टैक्स वसूली के लिए RTO की चेतावनी, जारी होगी आरसी

AI image

इनको मिलेगी राहत

■ **अक्सर देखा** गया है कि गाड़ी खराब हो जाने या कबाड़ में बिक जाने के बाद भी मालिक उसका रजिस्ट्रेशन कैंसल नहीं कराते। एआरटीओ ने बताया कि यदि आपकी गाड़ी 5 साल से खड़ी है या खत्म हो चुकी है, तो आप 15 दिन के भीतर आरटीओ कार्यालय आकर अपनी स्थिति स्पष्ट करें।

15 दिन की मोहलत

■ **विभाग ने** इन 11 हजार वाहन मालिकों को 15 दिन का समय दिया है। इसके बाद इनकी लिस्ट डीएम कार्यालय को सौंप दी जाएगी। एक बार आरसी जारी होगी।

ट्रिपल स्युसाइड

अब तक की जांच में कोई क्लू नहीं मिला

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : तीन बहनों के सामूहिक स्युसाइड केस में पुलिस लगातार परिवार, रिश्तेदार और पड़ोसियों से पूछताछ कर रही है, लेकिन अब तक किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सका है। तमाम लोगों से पूछताछ में ऐसा लग रहा कि पिता भोग विलास से भरा जीवन जी रहा था, जबकि पत्नियां कम पढ़ी लिखी हैं और उन्हें भूलने की बीमारी भी है। ध्यान न देने की वजह से तीनों बहनें मोबाइल की एडिक्ट हो गईं। जब पानी सिर से ऊपर चला गया, तो पिता ने उनका गेम छुड़वाने के लिए दोनों मोबाइल बेच दिए, जो वह बर्दाश्त नहीं कर पाई और आत्महत्या कर ली।

पुलिस के पास नहीं जवाब

- पिता जी रहा था भोग विलास से भरा जीवन, पत्नियां थी कम पढ़ी-लिखी और भूलने की भी थी बीमारी
- बच्चियों का ध्यान रखने को पिता ने की थी मुस्लिम लड़की से तीसरी शादी, उसने भी नहीं दिया ध्यान

दोनों मां को है भूलने की बीमारी

बच्चियों के नाना और मौसी-मौसा से करीब तीन घंटे पूछताछ हुई। इसमें पता चला कि बच्चियों के पिता ने जिन दो बहनों से शादी की, वह पांचवीं पास हैं और उन्हें भूलने की बीमारी है। बच्चियों का ध्यान रखने के लिए उसने मुस्लिम युवती से तीसरी शादी की।

महीनों से नहीं दिया दोनों फ्लैट का किराया

पिता की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, जिसकी वजह से वह ऑफिस वाले फ्लैट का किराया छह माह से नहीं दे पाया। जहां रहता है उसका भी रेंट तीन माह से नहीं दिया है। जबकि पिता ने मीडिया को बताया था कि उसकी आर्थिक स्थिति ठीक है।

पढ़ने को दिया मोबाइल और दूर हो गईं बेटियां

2019 में कोविड के दौरान पिता ने तीनों बच्चियों को पढ़ने के लिए मोबाइल दिलाया था। इसके बाद पिता ने पलटकर बच्चों को नहीं देखा। तीनों पत्नियों पर बच्चियों की देखभाल की जिम्मेदारी सौंप दी। मगर दो पत्नियों के अनपढ़ और भूलने की आदत के चलते वह उनका ध्यान नहीं रख पाईं। ऐसे में मोबाइल मिलने के बाद तीनों बेटी रील की दुनिया में चली गईं। वह घंटों मोबाइल देखतीं और कमरे से बाहर ही नहीं निकलती थीं। यह बात पिता के लिए बेचैनी बन रही थी। ऐसे में उसने मोबाइल की लत छुड़ाने के लिए छह माह पहले एक मोबाइल छीनकर बेच दिया, जबकि दूसरा मोबाइल घटना से 15 दिन पहले ही बेचा था।

स्ट्रे डॉग का आतंक, वकील को काटा

स्टरलाइजेशन व वैक्सीनेशन की मांग

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : ट्रांस हिंडन के इंदिरापुरम, वैशाली, वृज विहार, विधायक कॉलोनी, डेल्टा कॉलोनी और राजनगर एक्सटेंशन से लेकर शालीमार गार्डन तक इन दिनों आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे क्षेत्रवासियों में भय का माहौल बना हुआ है। निवासियों का कहना है कि अस्थायी कार्रवाई से समस्या हल नहीं होगी। स्टरलाइजेशन, वैक्सीनेशन और नियमित मॉनिटरिंग जैसी ठोस व्यवस्था लागू की जाए, जिससे लोगों को राहत मिल सके। वैशाली सेक्टर -2 आशीर्वाद ग्रीन सोसायटी में सोमवार देर रात परिसर में टहल रहे अधिवक्ता अभिषेक पर आवारा कुत्तों ने हमला कर दिया। जब अभिषेक ने बचने का प्रयास किया तो कुत्तों ने हाथ में दांत गड़ा दिए। इसी दौरान स्कूटी से जा रहे एक दंपती पर भी कुत्तों ने हमला कर दिया। घटना की सूचना पुलिस को दी गई है।

पीड़ित को गहरे घाव आए हैं

आठवीं की लापता छात्राएं अजमेर शरीफ में मिलीं

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : लिंकरोड के झंडापुर इलाके से एक साथ लापता हुईं आठवीं की दो छात्राओं को पुलिस ने अजमेर शरीफ से बरामद कर लिया है। दोनों को वापस गाजियाबाद लाकर काउंसलिंग के बाद उन्हें परिजन को सौंप दिया गया। वहीं, इंदिरापुरम से लापता हुई 10वीं की छात्रा का पता नहीं चल पाया है। झंडापुर निवासी दो छात्राएं स्कूल ड्रेस पहनकर घर से निकली थीं। स्कूल जाने की जगह दोनों अपनी एक सहेली के घर पहुंचीं। जहां दोनों ने कपड़े बदले और निकल गईं। यह बात आठ फरवरी की है। एक साथ दो छात्राओं के लापता होने पर पुलिस भी सक्रिय हुई और तुरंत छानबीन शुरू की गई। 9 फरवरी की शाम एक छात्रा ने अपनी बड़ी बहन को इंस्टाग्राम पर मैसेज करके अजमेर शरीफ में होने की बात बताई। इसके साथ ही यह भी बताया कि उनके पास रुपये भी नहीं हैं। जहां वह ठहरी थीं, उस धर्मशाला के संचालक ने बच्ची जानकर रुपये नहीं लिए।

सिस्टम पर सवाल NDRF रोड की हालत जर्जर, कई बार शिकायत के बाद भी अफसरों ने ध्यान नहीं दिया तो लोगों ने खुद किए प्रयास

ज़िम्मेदार पीछे हटे तो खुद ही रोड के जानलेवा गड्ढे भरे

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : मधुबन बापूधाम योजना को जोड़ने वाली NDRF रोड स्थानीय लोगों के साथ वाहन चालकों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है। सड़क पर गहरे और जानलेवा गड्ढे हो चुके हैं। इससे दोपहिया वाहनों का संतुलन बिगड़ना आम बात हो गई है। इसकी वजह से रोजाना हादसे भी हो रहे हैं। स्थानीय निवासियों के अनुसार, रोजाना यहां दर्जनों बाइक सवार गिरकर चोटिल हो रहे हैं। वहीं, धूल के गुबार और पत्थरों की वजह से पैदल चलना भी दूभर है। हैरानी की बात यह है कि महत्वपूर्ण सड़क होने के बावजूद GDA ने इसे लंबे समय तक अनदेखा किया। इससे यह सड़क जानलेवा बन चुकी है। इसके बावजूद जब जिम्मेदार आगे नहीं आए तो स्थानीय दुकानदारों ने सरकारी तंत्र के भरोसे बैठने के बजाय खुद चंदा जुटाया। इसके बाद जेसीबी (JCB) सड़क पर मलबा और मिट्टी डलवाई, ताकि हादसे न हों।

पहले ऐसा हाल था

स्थानीय दुकानदारों ने खुद ही चंदा जुटाकर गड्ढों को भर दिया

अधिकारी कह रहे जल्द होगा काम

GDA के एग्जिक्यूटिव इंजीनियर योगेश पटेल ने बताया कि सड़क को प्राथमिकता पर रखा गया है। सड़क के निर्माण के लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। एजेंसी का चयन कर लिया गया है और वर्क ऑर्डर जारी होने की प्रक्रिया में है। कुछ दिनों में धरातल पर काम शुरू हो जाएगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि नई सड़क बनने के बाद जलभराव और गड्ढों की समस्या खत्म हो जाएगी।

शिकायतों के बाद भी नहीं हुई सुनवाई

स्थानीय दुकानदार राकेश कहते हैं कि एनडीआरएफ रोड पर राहगीर गिर रहे थे। पिछले दिनों हुई बारिश के बाद हालात बहुत अधिक खराब हो गए थे। हमने कई बार शिकायत की, लेकिन कोई नहीं आया। आखिर में हमने खुद चंदा एकत्र किया और जेसीबी बुलाकर गड्ढों को भरवाया। राहगीर सुमित का कहना है कि यह सड़क गाजियाबाद की सबसे खराब सड़कों में से एक है। रात के समय तो यहां से जान जोखिम में डाल कर निकलना पड़ता है। लाइट की कमी और गड्ढों से हादसों की आशंका रहती है।

CCI NG 3.7 Product: DelhiMasalamixBS PubDate: 11-02-2026 Zone: TIMSGhaziabad Edition: 1 Page: HDGZPG2 User: cci Time: 02-10-2026 23:05 Color:

सिद्धार्थ विहार-NH 9 कट पर रोजाना जाम से जूझ रहे लोग

अतिक्रमण और अवैध पार्किंग से सुबह-शाम पीक आवर्स में ज्यादा दिक्कत

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

सिद्धार्थ विहार से नैशनल हाइवे-9 (NH-9) को जोड़ने वाले कट पर अतिक्रमण और अवैध पार्किंग की वजह से वाहन चालकों को रोजाना जाम से जूझना पड़ रहा है। तेजी से विकसित होती आवासीय योजनाओं में से एक होने के बावजूद यहां कनेक्टिविटी बड़ी मुसीबत बन चुकी है। सुबह और शाम पीक आवर्स में यहां की स्थिति इतनी भयावह हो जाती है कि महज 500 मीटर का फासला तय करने में लोगों को 20 से 30 मिनट लग रहे हैं। इस कट पर न केवल सिद्धार्थ विहार के हजारों निवासी निर्भर हैं, बल्कि प्रताप विहार और नोएडा की ओर जाने वाला ट्रैफिक भी इसी बिंदु पर आकर टकराता है। जाम की वजह से ईंधन की बर्बादी हो रही है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि प्रशासन और ट्रैफिक पुलिस की ओर से ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। बुनियादी ढांचे की कमी और वाहनों के बढ़ते दबाव ने इस पूरे स्ट्रेच को बॉटलनेक में बदल दिया है।

समस्या के बड़े कारण

■ **अतिक्रमण:** सिद्धार्थ विहार कट पर जाम केवल संयोग नहीं, बल्कि खराब प्लानिंग और अतिक्रमण का नतीजा है। यह मुख्य कारणों में सबसे प्रमुख है।

■ **बॉटलनेक स्ट्रक्चर :** सिद्धार्थ विहार की ओर से आने वाली चौड़ी सड़क जैसे ही NH-9 के कट पर पहुंचती है, वह सकरी हो जाती है। यह फनल इफेक्ट ट्रैफिक की गति को रोक देता है।

■ **अवैध पार्किंग और ऑटो स्टैंड :** कट के ठीक पास ऑटो और ई-रिक्शा चालकों का अवैध जमावड़ा रहता है। सवारी बैठाने के चक्कर में ये वाहन बीच सड़क पर खड़े होते हैं, जिससे पीछे वाहनों की लंबी कतार लग जाती है।

■ **रॉन्ग साइड ड्राइविंग :** NH-9 पर चढ़ने या उतरने के चक्कर में दुपहिया वाहन चालक अक्सर गलत दिशा (रॉन्ग साइड) से आते हैं, जो न केवल जाम का कारण बनता है, बल्कि हादसों को भी न्योता देता है।

बढ़ती आबादी दो वर्षों में सिद्धार्थ विहार में करीब 20,000 से अधिक नए परिवार शिफ्ट हुए हैं। वाहनों की संख्या में 40 फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है। सड़क का बुनियादी ढांचा वही पुराना है।

यह हो सकता है समाधान

■ **स्लिप रोड का निर्माण :** NH-9 के कट पर एक डेडिकेटेड स्लिप रोड बनाने की जरूरत है, ताकि हाइवे पर जाने वाले वाहन मुख्य ट्रैफिक में बाधा डाले बिना आसानी से मुड़ सकें।

■ **फुट ओवर ब्रिज :** सड़क पार करने वाले पैदल यात्रियों के कारण भी वाहनों की गति धीमी होती है। यहां एक एफओबी बनाकर पैदल यात्रियों और वाहनों के ट्रैफिक को अलग कर सकते हैं।

■ **यू-टर्न की रि-डिजाइनिंग :** मौजूदा कट को थोड़ा आगे या पीछे शिफ्ट करके ट्रैफिक मर्जिंग की समस्या को सुलझाया जा सकता है। साथ ही यहां सिग्नल टाइमिंग को स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (ITMS) से जोड़ने की आवश्यकता है।

■ **एनफोर्समेंट और पेनल्टी :** रॉन्ग साइड आने वालों पर भारी जुर्माना और कट के पास से अतिक्रमण हटाने के लिए स्थायी पुलिस बूथ की स्थापना से काफी हद तक राहत मिल सकती है।

बदलाव है जरूरी एक्सपर्ट की मानें तो जाम की इस समस्या को केवल ट्रैफिक पुलिस की तैनाती से हल नहीं किया जा सकता। इसके लिए इंजीनियरिंग और प्रशासनिक बदलाव की जरूरत है।

फटाफट खबरें

तरुण मिस्टर तो माही मिस ईवनिंग बनी

■ NBT न्यूज, मुरादनगर : दुहाई स्थित आरडी इंजीनियरिंग कॉलेज में फेयर पार्टी हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ चेयरमैन राकेश शर्मा, उपाध्यक्ष शाश्वत शर्मा और अनुभा शर्मा ने किया। तरुण त्यागी को मिस्टर व समीक्षा को मिस फेयर चुना गया। इसके अलावा मिस्टर ईवनिंग तरुण, मिस ईवनिंग माही, बेस्ट ड्रेस नेहा व प्रिया शर्मा को चुना गया। सामूहिक गान में कामिनी पार्टी ने अवॉर्ड जीता। इस मौके पर एचओडी उपाध्याय, विवेक त्यागी, राजेश शर्मा, मोहम्मद वकील, लव दीक्षित, गौरव मित्तल, अमित कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे।

प्रियांश मिस्टर तो अविका बनी मिस छाया

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : गोविंदपुरी स्थित छाया पब्लिक स्कूल में 12वीं कक्षा के बच्चों के लिए आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें प्रियांशु शर्मा को मिस्टर और अविका को मिस छाया के खिताब से नवाजा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक अखिलेश द्विवेदी ने दीप जलाकर किया। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से मचाया धमाल

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : नेव द स्कूल में किंडरगार्टन कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए फैंसी ड्रेस कार्यक्रम हुआ। विद्यालय के संस्थापक राम किशोर अग्रवाल, प्रबंधक अमित अग्रवाल, डायरेक्टर जनरल अपर्णा शर्मा, वाइस प्रिंसिपल रोमी शर्मा ने दीप जलाकर शुभारंभ किया। विद्यार्थियों ने विभिन्न पारंपरिक वेशभूषाओं, स्वतंत्रता सेनानियों, पशु-पक्षियों एवं सामाजिक पात्रों के रूप में मंच पर प्रस्तुतियां दीं। प्रबंधक अमित अग्रवाल ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

छात्राओं ने ली आर्ट एंड क्राफ्ट की ट्रेनिंग

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : दिन्नी देवी मोदी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पिडीलाइट केंद्र के सहयोग से तीन दिवसीय कार्यशाला हुई। पिडीलाइट के विशेषज्ञ रूपी टंडन ने आर्ट एंड क्राफ्ट, ब्लॉक प्रिंटिंग, डेकोरेशन और क्रिएटिव तकनीक से छात्राओं को प्रशिक्षित किया। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर पूनम शर्मा ने इस प्रकार के कार्यक्रमों को छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. चेतना ने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य छात्राओं में रचनात्मक एवं व्यावहारिक कौशल का विकास करना है।

विज्ञान मॉडल के विजेताओं का सम्मान

■ NBT न्यूज, नासिरपुर : प्राथमिक विद्यालय नासिरपुर में मंगलवार को राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के तहत जनपद स्तरीय क्विज व विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता हुई। पांच ब्लॉक से 20-20 स्टूडेंट ने भाग लिया। उद्घाटन मुख्य अतिथि पार्षद उदित मोहन व जिला कार्यक्रम अधिकारी शशि वार्ष्णेय ने किया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ओपी यादव व विकास कौल ने विजेताओं को स्मार्ट टैबलेट, प्रमाण पत्र, स्टेशनरी, विज्ञान आविष्कार बुक सहित बैग वितरण कर सम्मानित किया। जिला समन्वयक डॉ. राकेश कुमार, विमल चौधरी, रुचि त्यागी, अनुभव गुप्ता, कविता त्यागी, कुणाल गुप्ता, टिंकू कंसल आदि भी मौजूद रहे। संचालन पूनम शर्मा ने किया।

खो-खो स्पर्धा में तृतीय रहने पर सम्मानित

■ NBT न्यूज, जीटी रोड : जिला खो-खो असोसिएशन गाजियाबाद की ओर से वाईएमसी पब्लिक स्कूल जैन विहार में सम्मान समारोह हुआ। इसमें राष्ट्रीय खो-खो प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त करने वाली सब जूनियर बालक टीम को सम्मानित किया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली जूनियर व सीनियर टीमों को भी सम्मानित किया गया। सभी को सिविल डिफेंस के चीफ वार्डन ललित जायसवाल ने सम्मान दिया। विद्यालय की ओर से सभी खिलाड़ियों, कोच-मैनेजर का ढोल के साथ स्वागत किया।

पंजाब की हरजिंदर कौर ने 100 किलोग्राम वजन उठाकर बनाया रेकॉर्ड

■ NBT न्यूज, मोदीनगर

काजमपुर मार्ग पर आयोजित राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता के सातवें दिन महिला खिलाड़ियों ने दमखम दिखाया। भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अश्वनी कुमार, भारतीय मुक्केबाजी महासंघ के महासचिव प्रमोद कुमार, एलिको डिस्ट्रीब्यूटर राकेश खटिया ने विजेताओं को पदक पहनाए। प्रतियोगिता आयोजक द्रोणाचार्य अवॉर्डी विजय शर्मा ने बताया कि प्रतियोगिता की आकर्षण का केंद्र पंजाब की हरजिंदर कौर रहीं, जिन्होंने 69 किलो के सीनियर वर्ग में 100 किलोग्राम वजन उठाकर नया रेकॉर्ड अपने नाम किया। जूनियर वर्ग में हरियाणा की तमन्ना ने 96 किग्रा वजन का भार उठाकर रेकॉर्ड बनाया। यूथ वर्ग में 179 किलोग्राम भार उठाकर रसिका चिंचवाड़े (महाराष्ट्र) प्रथम, उल्ला बाबुला जुहीता गुप्ता (आंध्र प्रदेश) 174 भार उठाकर द्वितीय और आरती (हरियाणा) ने 163 किग्रा भार उठाकर तीसरा स्थान प्राप्त किया।

डिस्कस थ्रो में ऋचा सूद ने जीता सिल्वर मेडल

■ NBT न्यूज, गाजियाबाद : एथलीट डॉ. ऋचा सूद ने अपना 14वां अंतरराष्ट्रीय पदक जीता। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप की डिस्कस थ्रो में दूसरा स्थान प्राप्त किया। अबू धाबी में अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स गेम्स संगठन की ओर से आयोजित चैंपियनशिप में रशिया की अलीना शाइमन ने गोल्ड मेडल व रशिया की ही स्वेतलाना पटरेनको ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। चैंपियनशिप में विश्वभर के 25 हजार एथलीट्स भाग ले रहे हैं।

अथर्व कौशिक बने मैन आफ द मैच

■ NBT न्यूज, राजनगर एक्सटेंशन : गिरिराज आईपीएल सीजन-13 के लीग मैच में फेरोशियस इलेवन ने आसान जीत प्राप्त की। टीम ने रीडक्स को 54 रनों से हराया। गिरिराज क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए मैच में फेरोशियस इलेवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 199 रन का स्कोर बनाया। रीडक्स 16.1 ओवर में 145 रन बनाकर आउट हो गया। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार अथर्व कौशिक को दिया गया।

मैनापुर इलाके में GDA ने ढहाए अवैध निर्माण

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

शहर में अवैध निर्माण और बिना इजाजत काटी जा रही कॉलोनियों के खिलाफ गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई की है। जीडीए की टीम पुलिस बल के साथ गुलधर रेलवे स्टेशन के पास मैनापुर इलाके में पहुंची, जहां अवैध रूप से कॉलोनी बसाई जा रही थी। खसरा संख्या 277, 276 समेत आसपास की जमीनों पर बन रही अवैध बाउंड्रीवॉल, सड़कें और नालियां तोड़ दी गईं। जब बुलडोजर चला तो वहां मौजूद बिल्डरों और निर्माण करने वालों ने जमकर हंगामा और विरोध किया। माहौल बिगड़ता देख प्राधिकरण के पुलिस बल ने मोर्चा संभाला और प्रदर्शनकारियों को हटाकर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई पूरी की। कार्रवाई के दौरान सहायक अभियंता, अवर अभियंता और भारी पुलिस बल तैनात रहा।

'घर बैठे बनवाएं फैमिली आईडी'

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : प्रशासन ने शहरवासियों से अपनी फैमिली आईडी (एक परिवार, एक पहचान) बनवाने की अपील की है। आप खुद familyid.up.gov.in पर जाकर या पास के जन सुविधा केंद्र से इसे बनवा सकते हैं। इसके बाद सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे आप तक पहुंचेगा। बार-बार कागजी कार्यवाही और प्रमाणपत्र बनवाने के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। नौकरी और स्किल ट्रेनिंग प्रोग्राम में भी प्राथमिकता मिलेगी। आईडी बनवाते समय ध्यान रखें कि सभी सदस्यों का आधार कार्ड मोबाइल नंबर से लिंक हो, ताकि ओटीपी के जरिए वेरिफिकेशन हो सके। किसी भी जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर 1076 पर कॉल कर सकते हैं।

'पार्कों में सूखी घास की जगह नई लगाएं और पौधों की समय पर छंटाई भी करें'

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

- कवि नगर और सिटी जोन के कई पार्कों में पहुंचे नगर आयुक्त
- उन्होंने लाइटें जल रही हैं या नहीं, बेंच टूटी तो नहीं आदि चीजों को बारीकी से देखा
- पार्कों में गंदगी न फैलाने की लोगों से की अपील

पार्कों को बेहतर बनाने के लिए नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने मंगलवार को कवि नगर और सिटी जोन के कई पार्कों का निरीक्षण किया। इस दौरान नगर आयुक्त ने देखा कि लाइटें जल रही हैं या नहीं, बेंच टूटी तो नहीं हैं, पौधों को समय पर पानी मिल रहा है या नहीं। उन्होंने खास तौर पर डी ब्लॉक के कला धाम, बुद्धा और संत कबीर पार्क का जायजा लिया।

नगर आयुक्त ने उद्यान विभाग के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि पार्कों की हरियाली किसी भी कीमत पर कम नहीं होनी चाहिए। जहां घास सूख गई है, वहां दोबारा नई घास लगाई जाए और पौधों की समय-समय पर कटिंग हो। उन्होंने कहा कि पार्कों में बने ओपन जिम का फायदा हर उम्र के लोग उठा रहे हैं, इसलिए इनकी देखरेख में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सुपरवाइजरों को मॉनिटरिंग बढ़ाने के आदेश देते हुए उन्होंने कहा कि शहर के पार्कों को और अधिक सुविधाजनक बनाया जाएगा। उन्होंने जनता से भी अपील की कि वे पार्कों में गंदगी न फैलाएं और उसे स्वच्छ रखने में नगम सहयोग करें।

हैदराबाद में डायबिटीज से जुड़ी नई रिसर्च पर किया जाएगा मंथन

■ NBT न्यूज, गाजियाबाद : एमएमजी अस्पताल के फिजिशियन डॉ. आलोक रंजन डायबिटीज पर आयोजित होने वाली वर्ल्ड कांग्रेस में भाग लेने हैदराबाद जाएंगे। इस अंतरराष्ट्रीय स्तर की कांग्रेस में 13 फरवरी देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञ डायबिटीज से जुड़ी नई रिसर्च, आधुनिक उपचार पद्धतियों और रोकथाम के उपायों पर मंथन करेंगे। डॉ. आलोक रंजन ने बताया कि शुगर पर उनकी ओर से किए जा रहे कार्य को वह कांग्रेस में रखेंगे। इसके लिए उन्हें फेलोशिप अवॉर्ड के लिए भी आमंत्रित किया है। यह सम्मान 13 फरवरी को विशेष समारोह में प्रदान किया जाएगा। सेमिनार 13 से 15 फरवरी तक चलेगा।

MMG के फिजिशियन डॉ. आलोक रंजन 13 को अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में लेंगे भाग

'जातीय भेदभाव मिटाकर एकजुट हों हिंदू'

■ NBT न्यूज, मुरादनगर

रावली रोड स्थित रामलीला मैदान में मंगलवार को विराट हिंदू सम्मेलन हुआ। इसमें जातीय भेदभाव मिटाकर हिंदुओं को एकजुट होकर रहने की अपील की गई। स्वामी दीपंकर ने कहा कि देश समाज में जाट समाज, त्यागी समाज, यादव समाज समेत अलग-अलग जातियों की सभाएं देखी हैं, लेकिन विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन पहली बार हुआ है।

उन्होंने कहा कि बस्ती जिले में एक व्यक्ति ने हिंदू समाज की 300 लड़कियों का जीवन बर्बाद कर दिया, इसीलिए आज के समय में सभी हिंदुओं को एकजुट होकर रहना जरूरी है। स्वामी दीपंकर ने कहा कि धर्म सिर्फ मंदिरों में नहीं बल्कि समाज में भी दिखना चाहिए। आरएसएस के विभाग प्रचारक अतुल व सुनील कुमार ने कहा कि पूर्व की सरकारों ने आरएसएस को बंद करने का प्रयास किया था, जबकि आरएसएस एक ऐसा संगठन है, जिसके कार्यकर्ता किसी भी राज्य में प्राकृतिक आपदा आने पर सहायता के लिए सबसे पहले पहुंचते हैं। कार्यक्रम में लीलावती रामगोपाल स्कूल के बच्चों ने भागवत गीता के उपदेशों को पढ़कर सुनाया। कार्यक्रम में प्रमुख समाजसेवी आदेश गुप्ता, विनोद मित्तल, ब्लॉक प्रमुख राजीव त्यागी, अरविन्द भारतीय, मनोज शर्मा, नवीन सिंघल, संजीव त्यागी, दीपक मित्तल सहित अनेक बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

'एकजुटता से कर सकते हैं चुनौतियों का सामना'

■ NBT न्यूज, नंदग्राम : हिंदू सम्मेलन समिति की ओर से नंदग्राम में सोमवार को हिंदू सम्मेलन हुआ। मुख्य अतिथि श्री सिद्धेश्वर महादेव कुटी के पीठाधीश्वर महंत वैद्य मुकेशानंद गिरि महाराज ने कहा कि हिंदुओं के एकजुट न होने के कारण ही हिंदू धर्म के खिलाफ अनेक प्रकार के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। मुख्य वक्ता वक्ता डॉ. सुबहसु गर्ग ने कहा कि एकजुटता से ही हिंदू सभी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। कृष्ण पाल सिंह, रामकिशोर त्यागी, अरुण, प्रदीप भार्गव, महेश त्यागी, प्रीति पांचाल, शैलेंद्र चौहान मौजूद रहे।

12 को मोदीनगर में निकाली जाएगी निशान यात्रा

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : श्री खाटू श्याम मित्र मंडल ट्रस्ट के तत्वावधान में दो दिवसीय फाल्गुन महोत्सव होगा। 12 फरवरी को निशान यात्रा और 13 को एकादशी संकीर्तन का आयोजन होगा। निशान यात्रा में 10 हजार से अधिक भक्तों के शामिल होने का अनुमान है। ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश गोयल ने बताया कि निशान यात्रा गोविंदपुरी शिवचौक से शुरू होकर दिल्ली-मेरठ मार्ग से होते हुए खाटू श्याम मंदिर महेंद्रपुरी कॉलोनी में संपन्न होगी। दो दिवसीय कार्यक्रम के चलते नंदकिशोर शर्मा श्री धाम वृंदावन, मनोज शर्मा ग्वालियर, साहिल शर्मा पानीपत, निष्ठा शर्मा, पूजा अरोड़ा, ईशा शर्मा, सिद्धांत राज और सीताराम शर्मा श्री श्याम का गुणगान करेंगे। ट्रस्ट के महामंत्री पंकज गोयल ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यमंत्री कपिल देव अग्रवाल, डॉ. सोमेंद्र तोमर, सुनील शर्मा, सांसद राजकुमार सांगवान, विधायक डॉ. मंजू शिवाच आदि मौजूद रहे।

JKG इंदिरापुरम ने जीती जूनियर ओलिंपिक्स ट्रॉफी

■ NBT रिपोर्ट, इंदिरापुरम : जेकेजी इंटरनैशनल स्कूल इंदिरापुरम के बच्चों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 2 से 5 फरवरी के बीच में आयोजित जूनियर ओलिंपिक्स-2026 की चैंपियंस ट्रॉफी अपने नाम कर ली है। इस प्रतियोगिता में एनसीआर के 35 से अधिक स्कूलों ने हिस्सा लिया था। इसमें जेकेजी इंदिरापुरम के बच्चों ने 140 पदक जीतकर स्कूल का नाम रोशन किया है। इसमें 75 गोल्ड, 36 सिल्वर और 29 ब्रॉन्ज मेडल शामिल हैं। इस मौके पर स्कूल की प्रिंसिपल निधि गौड़ ने स्टूडेंट्स को उनकी जीत पर बधाई देते हुए कहा कि यह छात्रों की कड़ी मेहनत का परिणाम है जिसमें स्कूल के ट्रेनर्स के अलावा टीचर्स और पैरेंट्स भी बधाई के पात्र हैं।

सख्ती 18 को नोटिस, GDA ने स्वेच्छा से जमीन छोड़ने के लिए की कार्रवाई, पालन न होने पर अधिग्रहण किया जाएगा

हरनंदीपुरम योजना की राह में रोड़ा बने अवैध भट्ठे

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (GDA) की महत्वाकांक्षी हरनंदीपुरम योजना को विकसित करने की राह में अवैध ईंट-भट्ठे रोड़ा बने हुए हैं। यह प्रोजेक्ट मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण योजना का हिस्सा है, जिसे मार्च के अंत तक लॉन्च करने का लक्ष्य है। स्थिति यह है कि योजना के लिए कुल जमीन का लक्ष्य भी अधूरा है। जीडीए को करीब 100 हेक्टेयर जमीन और लेनी है। अब तक 70 हेक्टेयर का बैनामा हो चुका है और 151 हेक्टेयर पर सहमति बन चुकी है। जानकारों के अनुसार, इस रास्ते में सबसे बड़ी बाधा अवैध ईंट-भट्ठे हैं। जीडीए ने 18 ईंट-भट्ठों को नोटिस जारी किया है। इसका असर भी दिखने लगा है, जो भट्ठा मालिक जमीन देने में आनाकानी कर रहे थे, अब वे तैयार हो गए हैं। शासन से मिलने वाली अगली किस्त न फंसे, इसलिए सख्ती की है। एक तरफ सहमति से जमीन खरीदने की कोशिश जारी है, तो दूसरी तरफ उन किसानों और भू-स्वामियों के लिए अधिग्रहण का जाल भी बुना जा रहा है जो सहयोग नहीं कर रहे हैं।

किसानों की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

जीडीए ने कहा कि यदि सहमति के आधार पर जमीन मिलने में थोड़ी भी देरी हुई, तो तत्काल अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। इसका प्रस्ताव भी तैयार हो चुका है। अधिग्रहण की प्रक्रिया से किसानों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। यदि जमीन का बैनामा सीधे जीडीए के पक्ष में होता है, तो किसानों को तुरंत रकम मिल जाती है। अगर मामला अधिग्रहण में गया, तो मुआवजे के लिए सरकारी दफ्तरों और कचहरी के चक्कर काटने पड़ सकते हैं।

बजट संकट और CM योजना की डेडलाइन

हरनंदीपुरम योजना केवल जीडीए का प्रोजेक्ट नहीं है, बल्कि यह मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण योजना का एक प्रमुख हिस्सा है। शासन से निर्देश हैं कि योजना को मार्च के आखिरी हफ्ते तक हर हाल में लॉन्च कर दिया जाए। अगर जमीन हासिल करने में देरी हुई और लॉन्चिंग टली, तो बजट मिलने में दिक्कत आ सकती है। जीडीए अधिकारियों के मुताबिक, 100 हेक्टेयर जमीन के बिना योजना का खाका अधूरा है।

गलत आय प्रमाण पत्र से RTE का लाभ लेने का लगाया आरोप

■ NBT न्यूज, गाजियाबाद

इंडियन पेरेंट्स असोसिएशन ने आरोप लगाया कि आर्थिक रूप से सक्षम अभिभावक एक लाख रुपये से कम आय के प्रमाण पत्र बनवाकर आरटीई का अनुचित लाभ ले रहे हैं। इससे जरूरतमंदों का अधिकार छीना जा रहा है। संस्था ने इस मामले में जिला प्रशासन से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है।

संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष सीमा त्यागी ने कहा कि हर वर्ष बिना समुचित जांच के आय प्रमाण पत्र जारी होने से पात्र बच्चों को शिक्षा के मौलिक अधिकार से वंचित होना पड़ता है। उन्होंने मुख्यमंत्री, जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी से ऐसे अभिभावकों के साथ-साथ लापरवाही बरतने वाले संबंधित कर्मचारियों एवं अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई करने की अपील की है।

संस्था के उपाध्यक्ष विनय कक्कड़ ने बताया कि पोर्टल के सुचारू रूप से कार्य न करने के कारण अभिभावकों को ऑनलाइन फॉर्म भरने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ओपी यादव ने इस मुद्दे को उच्च अधिकारियों के साथ होने वाली ऑनलाइन बैठक में प्रमुखता से उठाने का आश्वासन दिया।

CCI NG 3.7 Product: DelhiMasalamixBS PubDate: 11-02-2026 Zone: TIMSGhaziabad Edition: 1 Page: HDGZPG3 User: cci Time: 02-10-2026 23:11 Color:

फटाफट खबरें

छात्रा से छेड़छाड़, थाने में दी तहरीर

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : एक कॉलोनी निवासी इंटर की 17 वर्षीय छात्रा के साथ छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। विरोध पर छात्रा के साथ अभद्रता भी की गई। कॉलोनी निवासी एक व्यक्ति ने बताया कि एक सप्ताह से तीन युवक छात्रा का पीछा कर रहे हैं। आरोपी कॉलेज के साथ छेड़छाड़ करते हैं। मंगलवार दोपहर जब छात्रा ट्यूशन जा रही थी तो आरोपियों ने छेड़छाड़ की। घर पहुंचकर छात्रा ने आपबीती सुनाई। इसके बाद परिजनों ने थाने में तहरीर दी। एसीपी मोदीनगर ने बताया कि आरोपियों की तलाश की जा रही है। जांच के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

कॉलेज से लौट रहे छात्र को पीटा

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : कॉलेज से घर लौट रहे 11वीं के छात्र को छह युवकों ने मारपीट कर घायल कर दिया। छात्र की तरफ से कोतवाली में तहरीर दी गई है। दीन मिल कॉलोनी निवासी वर्ण केएन मोदी साइंस एंड कॉमर्स कॉलेज में छात्र है। वर्ण ने बताया कि मंगलवार दोपहर कॉलेज से लौट रहा था। इसी दौरान आरोपी उसे रेलवे स्टेशन की तरफ ले गए और मारपीट की। बेहोश होने पर आरोपी फरार हो गए। राहगीरों ने वर्ण की मदद की। इसके बाद छात्र ने कोतवाली में पहुंचकर पुलिस को सूचना दी। एसीपी मोदीनगर भास्कर वर्मा का कहना है कि रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

नाली की सफाई के दौरान मिला भ्रूण

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : खोड़ा में थाना गेट के पास नाले की सफाई करते समय कर्मियों को भ्रूण मिला। उन्होंने पुलिस को सूचना दी। जांच में पुलिस को कोई ठोस जानकारी नहीं मिली है। एसीपी इंदिरापुरम अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि डायल 112 पर सोमवार को सूचना मिली थी। पुलिस जब मौके पर पहुंची तब भ्रूण पड़ा हुआ मिला। चिकित्सकीय जांच के अनुसार भ्रूण चार माह का बताया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच चल रही है।

FIR के विरोध में एसीपी का घेराव

■ NBT रिपोर्ट, मोदीनगर : बार एसोसिएशन मोदीनगर के सचिव नकुल त्यागी के खिलाफ दर्ज एफआईआर के मामले में मंगलवार को वकीलों ने हड़ताल कर एसीपी का घेराव किया। एसीपी ने दो दिन में निष्पक्ष जांच कर कार्रवाई का आश्वासन दिया है। वकीलों ने अनिश्चितकालीन धरना शुरू कर रजिस्ट्री कार्य ठप करने की चेतावनी दी है। पिछले दिनों एसोसिएशन के सचिव नकुल त्यागी के खिलाफ कोतवाली में धोखाधड़ी से बैनामा कराने में रिपोर्ट दर्ज हुई है।

AIMIM के महानगर अध्यक्ष नजरबंद

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : एआईएमआईएम (ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन) के महानगर अध्यक्ष मनमोहन झा को मंगलवार को पुलिस ने उनके कार्यालय पर नजरबंद किया। मनमोहन झा गामा ने बताया कि मेरठ में पैगाम ए इंसाफ कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के लिए उन्हें प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली से शिष्टाचार भेंट करने के लिए जाना था। अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा टॉवर के अध्यक्ष पंडित नितिन शर्मा को सोमवार देर रात नजरबंद कर लिया।

सेवानिवृत्त अधिकारी से 1.11 करोड़ की ठगी में एक अरेस्ट

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

शेयर ट्रेडिंग में निवेश कर मुनाफा दिलाने का झांसा देकर डिफेंस के रिटायर्ड अफसर से 1.11 करोड़ रुपये की ठगी में गिरोह के एक शातिर को साइबर क्राइम थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के पास से एक मोबाइल बरामद किया। उससे पूछताछ में पांच राज्यों में सात लोगों से हुई करीब सवा तीन करोड़ रुपये की ठगी की घटनाओं का खुलासा हुआ है।

डिफेंस से रिटायर्ड गाजियाबाद राजनगर एक्सटेंशन में रहने वाले शिवराज सिंह यादव से 1.11 करोड़ रुपये की ठगी की थी। पुलिस ने 9.4 लाख रुपये रिकवर कर वापस कराए। एडीसीपी क्राइम पीयूष सिंह ने बताया कि 2025 में राजनगर एक्सटेंशन निवासी शिवराज सिंह यादव के साथ शेयर ट्रेडिंग में निवेश कर मुनाफा कमाने के नाम पर साइबर ठगी की गई थी। उन्हें एक वॉट्सऐप ग्रुप में जोड़ा गया, जहां फर्जी शेयर ट्रेडिंग वेबसाइट और ऐप के जरिए निवेश के लिए प्रेरित कर एक करोड़ 11 लाख 10 हजार रुपये ठगे थे। जांच के बाद इंदिरापुरी राजीव गार्डन निवासी मोहम्मद नदीम को दस फरवरी को खोड़ा क्षेत्र से गिरफ्तार किया है। हाल में वह दिल्ली शाहदरा के बिहारी कॉलोनी में रहता है।

फर्जी फर्म के नाम पर खुलवाया था बैंक खाता

नदीम ने बताया कि अंकित और अरुण नाम के दो शख्स ने गेमिंग प्लैटफॉर्म के माध्यम से होने वाली साइबर ठगी के बारे में बताया था। गेमिंग से जुड़ी रकम विभिन्न खातों में आती थी और बदले में उसे पांच प्रतिशत कमीशन मिलता था। इसके बाद उसने देव लॉजिस्टिक नाम से एक फर्जी फर्म बनाई और एक निजी बैंक में करंट अकाउंट खुलवाया। इस खाते की चेकबुक, डेबिट कार्ड और इंटरनेट बैंकिंग की आईडी व पासवर्ड अंकित और अरुण को दे दिए थे, जबकि खाते से लिंक मोबाइल नंबर नदीम के पास था। खाते में होने वाले ट्रांजेक्शन के ओटीपी वह दोनों को उपलब्ध कराता था, जिससे बड़ी रकम को इधर-उधर किया जाता था। एसीपी क्राइम अमित सक्सेना का कहना है कि अंकित और अरुण की तलाश की जा रही है।

पांच राज्यों के सात लोगों से 3.29 करोड़ रुपये ऐंठ लिए थे

आरोपी को खोड़ा से गिरफ्तार किया है

आरोपी शेयर ट्रेडिंग के नाम पर राजनगर एक्सटेंशन में रहने वाले शख्स को लगाया था चूना

आरोपी पास से एक मोबाइल फोन किया बरामद, फर्जी फर्म के नाम पर करंट अकाउंट खुलवाया

जांच में सामने आया है कि गिरोह ने उत्तर प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, गुजरात और तमिलनाडु के लोगों से भी ठगी की है। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के आशीष चौधरी से 5.41 लाख और रचना चौधरी से 95 हजार रुपये की ठगी की थी। पुणे में श्रीनिवास प्रसाद से 12 लाख, आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के एम. जहीर से 8.5 लाख, गुजरात के भावनगर में बोरिचा परेश भाई से 71.85 लाख रुपये और तमिलनाडु के चेन्नै सीसीबी क्षेत्र के एम. महेश्वरन से 1.19 करोड़ रुपये की साइबर ठगी की थी। इनका खुलासा हुआ है। आगे की कार्रवाई के लिए संबंधित राज्यों की पुलिस से संपर्क किया जा रहा है।

अग्रिम कार्रवाई के लिए राज्यों से किया जा रहा संपर्क

जूलरी शोरूम में चोरी का भंडाफोड़, सेल्स मैनेजर निकला मास्टरमाइंड

4 आरोपी अरेस्ट, 26 से अधिक वारदात को दिया अंजाम

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

गाजियाबाद के जूलरी शोरूम, ऑफिस और घरों में चोरी करने वाले अंतरराज्यीय गैंग का क्राइम ब्रांच की स्वाट टीम ने भंडाफोड़ करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गैंग का मास्टर माइंड एक जूलरी शोरूम में सेल्स मैनेजर है। दिल्ली के जूलरी शोरूम में चोरी के बाद जेल जाने के दौरान उसने तीन बदमाशों को गैंग में शामिल कर लिया।

मास्टरमाइंड ने जेल में बंद तीन बदमाशों से दोस्ती कर बनाया अंतरराज्यीय गिरोह

आरोपियों से गहने और एक कार बरामद की गई

आरोपियों ने अपने नाम रोशन यादव निवासी ग्राम गोपाल चक जिला गाजीपुर, निमिष अग्रवाल निवासी मोतीबाग बुलंदशहर, रघु निवासी प्रहलाद विहार रोहिणी दिल्ली और अमन सक्सेना निवासी आवास विकास कॉलोनी हापुड़ बताए हैं। बदमाशों ने बताया कि एक फरवरी को राजनगर में एक कोठी से तिजोरी चोरी की थी। पांच फरवरी को अंबेडकर रोड पर तनिष्क और दीपाली ज्वैलर्स शोरूम में चोरी का प्रयास किया था। उसी रात साहिबाबाद क्षेत्र में एसपीएस अपार्टमेंट सोसायटी के फ्लैट से एक लाख रुपये नकद के अलावा लाखों के जेवर और कीमती सामान चुराया था। आरोपियों से फ्लैट से चोरी जेवर और चेकबुक और पासपोर्ट, वारदात में प्रयुक्त गाड़ी बरामद की गई है।

जेल में रची साजिश

पूछताछ में निमिष ने बताया कि कुछ समय पूर्व तनिष्क शोरूम में सेल्स मैनेजर था। इसके बाद एक शोरूम से जूलरी चोरी कर ली थी। उसे जेल भेजा गया था। जेल में रघु और प्रेम के साथ शोरूम में चोरी की साजिश रची थी।

आरोपियों पर कई केस

रघु के खिलाफ गाजियाबाद, नोएडा और दिल्ली में 26, निमिष अग्रवाल के खिलाफ गाजियाबाद और बुलंदशहर में चार, रोशन के खिलाफ तीन और अमन सक्सेना के खिलाफ तीन केस दर्ज हैं।

"आरोपियों ने साहिबाबाद, कविनगर और सिहानी गेट थाना क्षेत्र में चोरियां की थीं। इन घटनाओं का खुलासा करने के लिए स्वाट टीम को लगाया था, जिसमें हम सफल रहे। करीब दो दर्जन से अधिक घटनाओं का खुलासा हुआ है। - पीयूष सिंह, एडीसीपी, क्राइम ब्रांच

हिंदू युवक को मुस्लिमों ने दिया कंधा

■ NBT रिपोर्ट, हापुड़ : थाना हापुड़ देहात क्षेत्र के एक मोहल्ले में रहने वाले युवक की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। मुस्लिम समुदाय के युवकों ने उसकी अर्थी को कंधा देकर एकता का परिचय दिया। मोहल्ला कोटला सादात निवासी अर्जुन की पास स्थित रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई थी। मृतक के परिजनों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए मुस्लिम युवकों ने मदद का हाथ बढ़ाया। उन्होंने अंतिम संस्कार की तैयारियों में भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल अर्थी को कंधा दिया, बल्कि अंतिम संस्कार में भी सहयोग किया। इस दौरान कई लोग मौजूद रहे।

गहने और नकदी चोरी रिश्तेदार पर शक, केस

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

इंदिरापुरम के प्रह्लादगढ़ी के एक मकान से लाखों के गहने और नकदी चोरी का मामला सामने आया है। मकान मालिक दिल्ली से वापस लौटा, तो चोरी का पता लगा। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने 9 फरवरी को केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मूलरूप से इटावा निवासी राहुल ने दर्ज केस में बताया कि वह इंदिरापुरम थानाक्षेत्र के प्रह्लादगढ़ी में धर्मेंद्र शर्मा के मकान में किराए पर रहते हैं। 27 दिसंबर को वह अपने भतीजे के पास दिल्ली गया था। अगले दिन शाम को वह वापस लौटा तो मकान का ताला टूटा हुआ था और अंदर सारा सामान बिखरा हुआ पड़ा था। पीड़ित का कहना है कि घर से सोने की चेन, अंगूठी, मंगलसूत्र, पायल, झाले और हजारों की नकदी गायब थी। पीड़ित की सूचना पर पहुंची पुलिस ने छानबीन की, लेकिन चोर का सुराग नहीं लगा। पीड़ित का कहना है कि उनके साथ उनका एक रिश्तेदार गौतम भी उस मकान में रहता है। चोरी की वारदात के बाद वह गायब है। उन्होंने रिश्तेदार पर चोरी का शक जताते हुए पुलिस को तहरीर दी है। एसीपी इंदिरापुरम अभिषेक श्रीवास्तव का कहना है कि केस दर्ज कर लिया गया है। सीसीटीवी कैमरों को चेककर चोरों की तलाश किया जा रहा है।

पड़ोसियों ने महिला और परिवार से की मारपीट

■ NBT न्यूज, लोनी

दबंगई

- बिजली का केबल काटने का आरोप लगाते हुए आरोपियों ने मां और बेटियों को पीटा
- पीड़िता ने कोतवाली में दी तहरीर, शिकायत के आधार पर दो लोगों पर रिपोर्ट दर्ज

सभा गार्डन कॉलोनी में रहने वाली महिला ने पड़ोसियों पर मारपीट का आरोप लगाते हुए दो दबंगों के खिलाफ लोनी कोतवाली में तहरीर दी है। एसीपी लोनी सिद्धार्थ गौतम का कहना है कि शिकायत के आधार पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

सभा गार्डन कॉलोनी में रहने वाले राशिद ने बताया कि घर के बिजली के खंभे से आने वाले लोगों के केबल और बिजली की लाइन भी लटकी हुई है। आए दिन किसी न किसी की बिजली चली जाती है। छह फरवरी को उनकी पत्नी घर में काम कर रही थीं। इस दौरान पड़ोस में किसी की बिजली चली गई। पड़ोसी भूरा उर्फ आफताब और तालिब उनके घर पहुंचे और केबल काटने का आरोप लगाते हुए गाली-गलौज करने लगे। शोर सुनकर परिजन घर से बाहर आए और विरोध किया। इस पर दबंगों ने अपने साथियों को बुला लिया और पीड़ित की पत्नी के अलावा उसकी बहन फरजाना, बेटी नाजिया और बेटे समद के साथ मारपीट की। लोग इकट्ठा होने लगे तो दबंग जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। इसके बाद पीड़ित ने घटना की शिकायत पुलिस थाने में की।

बाइक सवार दंपती को ट्रक ने मारी टक्कर

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : साहिबाबाद में बाइक सवार दंपती को ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में दोनों घायल हो गए हैं। बेटी ने ट्रक नंबर के आधार पर आरोपी चालक के खिलाफ केस दर्ज कराया है। राजबाग कॉलोनी निवासी शेफाली ने बताया कि दो फरवरी को पिता राजेंद्र प्रसाद शर्मा और माता बाइक से ग्रेटर नोएडा से लौट रहे थे। साहिबाबाद सब्जी मंडी के पास ट्रक ने ओवरटेक करने के चक्कर में बाइक में टक्कर मार दी। इससे माता-पिता घायल हो गए। पिता के हाथ में फ्रैक्चर आया है। शेफाली ने ट्रक चालक के खिलाफ लिंक रोड थाने में तहरीर दी है। एसीपी के अनुसार, केस दर्ज कर चालक को तलाश किया जा रहा है।

SP आवास के पास कंपनी से 14 लाख की चोरी

■ NBT न्यूज, हापुड़

थाना हापुड़ क्षेत्र में एसपी आवास के पास बदमाशों ने प्राइवेट कंपनी के ऑफिस में घुसकर 14 लाख रुपये चोरी कर लिए। तीन चोर सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए हैं। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है।

तीन चोर कंपनी में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए

जानकारी के अनुसार, मेरठ रोड पर एसपी आवास के पास इंस्कार्ट सर्विस प्राइवेट लिमिटेड कंपनी का ऑफिस है। कर्मचारी हापुड़ के गांव दत्तोई निवासी राहुल शर्मा ने बताया कि सोमवार देर रात करीब साढ़े 12 बजे तीन चोर कार्यालय में घुसे। उन्होंने मुख्य दरवाजे का ताला तोड़ा और कैश रूम में रखी नकदी लेकर भाग गए। फुटेज पुलिस के हाथ लग चुकी है। घटना की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंच घटनास्थल का निरीक्षण किया। थाना देहात प्रभारी नीरज कुमार ने बताया कि मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

क्रिप्टो करंसी में निवेश के नाम पर हड़पे एक करोड़ 42 लाख

■ NBT न्यूज, लोनी

एक कंपनी के माध्यम से क्रिप्टो करंसी में निवेश करने पर 20 महीनों में रकम दोगुनी करने का झांसा देकर 41 लोगों से एक करोड़ 42 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। पीड़ितों ने मामले की शिकायत पुलिस कमिश्नर से की। एसीपी अंकुर विहार की जांच के बाद लोनी बॉर्डर पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

टीला शहबाजपुर गांव निवासी राकेश कुमार ने बताया कि करीब चार वर्ष पहले बागपत खिलौनपुरा थाना सिंघावली अहीर निवासी अजय कुमार से मुलाकात हुई थी। अजय ने बताया कि 20 महीने में रकम दोगुनी करने की बात कही। उसने पीड़ित को साहिबाबाद के होटल कंट्री इन में बुलाया। वहां अजय ने चार साथियों विनोद कुमार, सचिन कुमार, विनय और गोपाल से मिलवाया। आरोपियों ने एएसटी कॉइन क्रिप्टो करंसी के नाम से कंपनी चलाने और मुनाफे का झांसा दिया। इसके बाद रेफरल लिंक के माध्यम से रकम ट्रांसफर कराई। बाद में पता चला कि आरोपियों ने फर्जी वेबसाइट बनाकर 41 लोगों से दो वर्ष में करीब 1.42 करोड़ रुपये ठगे हैं। पुलिस जांच कर रही है।

न्यूजीलैंड में नौकरी के नाम पर रकम हड़पी

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : न्यूजीलैंड में नौकरी लगवाने का झांसा देकर एक युवक से हजारों रुपये ठग लिए गए। मेरठ के रोहटा निवासी दीपांशु त्यागी ने बताया कि एक जानकार ने आरोपी आशीष चौधरी के बारे में बताया था। आशीष का वैशाली सेक्टर-चार शिप्रा मॉल मेन मार्केट में अराहज इंटरनैशनल के नाम से ऑफिस है। आशीष और उसके साथियों सिद्धार्थ चौधरी, द्वारिका सिंह और संजय सिंह ने न्यूजीलैंड में अच्छे पैकेज पर नौकरी लगवाने का झांसा देकर 40 हजार रुपये और पासपोर्ट ले लिया। आरोपियों ने उसे फर्जी ऑफर लेटर और वीजा थमा दिया। पीड़ित की शिकायत पर कौशांबी पुलिस ने चारों के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

शेयर में मुनाफे का झांसा दे साढ़े 35 लाख ठगे

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : शेयर ट्रेडिंग में मुनाफा दिलाने का झांसा देकर गोविंदपुरम निवासी एक व्यक्ति से साइबर ठगों ने साढ़े 35 लाख रुपये ठग लिए। गोविंदपुरम निवासी मुकेश सिंह पी. ने बताया कि एक नवंबर 2025 को उनके नंबर पर माला तोडरवाल नाम की महिला ने संपर्क किया। उसने खुद को एसबीआई सिक्योरिटीज की रिलेशनशिप मैनेजर बताते हुए एचएनआई ट्रेडिंग और आईपीओ में विशेष मुनाफे का झांसा दिया। उन्हें एक ग्रुप में जोड़ा, जिसके एडमिन माला तोडरवाल और सुरेश शुक्ला थे। उन्हें कई वेबसाइट पर लॉग-इन कराया। इसके बाद निवेश के नाम पर उनसे करीब 35 लाख 70 हजार रुपये ट्रांसफर करा लिए गए। एडीसीपी क्राइम पीयूष सिंह का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

फर्जी वसीयत बना एक करोड़ की मांगी रंगदारी

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

कविनगर क्षेत्र रहने वाले व्यक्ति ने पूर्व कर्मचारी पर फर्जी वसीयत बनाने और एक करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने का आरोप लगाया है। मामले में शास्त्रीनगर ई-ब्लॉक निवासी दीपक अग्रवाल ने कोर्ट के आदेश पर थाने में राजबहादुर और अन्य के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

पीड़ित ने कोर्ट के आदेश पर एक नामजद समेत अन्य आरोपियों पर दर्ज कराया केस

शिकायत में पीड़ित दीपक अग्रवाल ने बताया कि नानी शकुंतला अग्रवाल की संपत्ति को लेकर 1993 में पारिवारिक समझौता किया गया था। समझौते के तहत निजी निवास वाले बंगले और उससे जुड़ी भूमि का आधा हिस्सा शकुंतला अग्रवाल और आधा हिस्सा उनकी पुत्री ऊषा अग्रवाल के नाम था। दीपक कहना है कि नानी की वसीयत में दर्ज था कि कानपुर स्थित मकान का आधा हिस्सा उनके और आधा हिस्सा उनकी पुत्री ऊषा अग्रवाल के नाम होगा। आरोप है कि राजबहादुर नामक व्यक्ति ने 18 मई 2011 की कथित पोस्ट-डेटेड वसीयत तैयार कर फर्जी हस्ताक्षर कर दिए। राजबहादुर के पिता पहले उनके नाना-नानी के यहां घरेलू सहायक थे और सेवानिवृत्ति के बाद राजबहादुर खुद इस संपत्ति पर बतौर गार्ड तैनात था। आरोप है कि इसी दौरान राजबहादुर फर्जी वसीयत के आधार पर नगर निगम और न्यायालय में प्रार्थना-पत्र देकर संपत्ति पर अपना दावा ठोक दिया। विरोध पर राजबहादुर ने धमकी दी। साथ ही, विवाद निपटाने के लिए एक करोड़ रुपये की मांग की।

जेपी ग्रुप के 9 अधिकारियों के साथ 11 पर केस

■ NBT रिपोर्ट, नोएडा : जय प्रकाश असोसिएट्स (जेपी) ग्रुप के नौ अधिकारियों समेत 11 लोगों के खिलाफ ग्रेटर नोएडा जेपी ग्रीन्स टाउनशिप में कारोबारी के साथ धोखाधड़ी, फर्जी बिल्डिंग प्लान देने, जमीन पर अवैध कब्जा, निर्माण रुकवाने और मजदूरों से मारपीट का आरोप लगा है। पीड़ित को जमीन को खरीदने के बाद 46 लाख रुपये अधिक लगाने पड़े, इसके बाद भी उन्हें जमीन पर कब्जा नहीं मिल रहा है। उन्होंने कोर्ट में न्याय की गुहार लगाई, मामले में कोर्ट के आदेश पर फेज टू थाना पुलिस ने 11 लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दिया है। फेज टू के सी ब्लॉक में रहने वाले सत्येंद्र नारायण द्विवेदी (70) ने पुलिस को बताया कि जेपी ग्रीन्स परियोजना के स्पोर्ट्स विला में उन्होंने जमीन खरीदी थी।

9वीं मंज़िल से गिरे मैनेजर की मौत

■ NBT रिपोर्ट, गुड़गांव

गुड़गांव की घटना, गुत्थी सुलझाने में जुटी पुलिस

फिलहाल यह मामला पुलिस के लिए पहेली बना हुआ है। शुरुआती जांच में स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह स्यूसाइड का केस है या फिर वरुण गलती से नीचे गिरे। पुलिस हर पहलू से मामले की जांच कर रही है। घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया गया है, ताकि पता लगाया जा सके कि जिस वक्त वरुण गिरे, उस समय वहां कोई और मौजूद था या नहीं। सहकर्मियों के अनुसार, वरुण स्वभाव से शांत थे। अचानक हुई घटना से कंपनी के कर्मचारी स्तब्ध हैं। इस की भी जांच हो रही है कि क्या वरुण कुछ दिनों से मानसिक तनाव या काम के दबाव में थे।

आईटी स्पेस पार्क में मंगलवार तड़के नौवीं मंजिल से गिरकर एक मैनेजर की मौत हो गई। मैनेजर जिस फ्लोर से गिरे, उसी पर संचालित कंपनी के ऑफिस में काम करते थे। घटना के वक्त वह नाइट शिफ्ट की ड्यूटी पर थे। घटना सुबह करीब 4:30 बजे की बताई जा रही है। सिक्युरिटी गार्ड ने मैनेजर का शव परिसर में देख पुलिस को सूचना दी।

झारखंड निवासी 34 साल के वरुण शंकर इसी टावर की नौवीं मंजिल पर स्थित एक कंपनी में काम करते थे। मंगलवार सुबह अचानक जोरदार आवाज सुनाई दी। परिसर में तैनात सिक्युरिटी गार्ड भागे तो उन्होंने युवक को जमीन पर देखा। पुलिस कंट्रोल रूम को सूचित किया गया, जिसके बाद वरुण को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी जान नहीं बच सकी। पुलिस ने बताया कि वरुण सोहना एरिया में किराए पर पत्नी के साथ रहते थे। आशंका है कि वरुण ने नौवीं मंजिल से कूदकर जान दी है।

फरीदाबाद में छेड़छाड़ के विरोध पर ड्राइवर की चाकू मार हत्या

■ NBT रिपोर्ट, फरीदाबाद : पल्ला थानाक्षेत्र के गिरदावर कॉलोनी में रहने वाले ड्राइवर जय सिंह (32) को लड़की से छेड़छाड़ का विरोध करना जान पर ही भारी पड़ गया। बदमाशों ने उन पर चाकुओं से ताबड़तोड़ वार कर हत्या कर दी। हमलावरों की संख्या चार से पांच बताई जा रही है। हत्यारोपी उसी कॉलोनी के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस ने मृतक के भाई की शिकायत पर हत्या का केस दर्ज कर लिया है। आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। गिरदावरी एन्क्लेव की गली नंबर 9 निवासी जय सिंह ड्राइवर थे। सोमवार दोपहर वह घर के पास पार्क में दोस्त सौरभ के साथ बैठे थे। इसी दौरान एक लड़का बहन के साथ कॉलोनी की ओर जा रहा था। पार्क में मौजूद कुछ युवक छेड़छाड़ करने लगे। इस पर जय सिंह ने छेड़छाड़ करने वाले युवकों को भगा दिया। इसके बाद आरोपियों ने वारदात को अंजाम दिया।

ज्ञान खंड में रेलिंग हो रही गायब

■ NBT रिपोर्ट, इंदिरापुरम : ज्ञान खंड में सड़क के डिवाइडर पर लगी लोहे की रेलिंग धीरे-धीरे गायब होती जा रही है। कई स्थानों पर रेलिंग पूरी तरह हट गई है, जिससे न केवल सड़क सुरक्षा पर खतरा बढ़ गया है, बल्कि डिवाइडर की मिट्टी सड़क पर फैलने लगी है। वहीं, स्थानीय निवासियों का कहना है कि सरकारी संपत्ति की सुरक्षा जरूरी है। कबाड़ीवाले और कई अज्ञात लोग रात में धीरे-धीरे लोहे की रेलिंग को काटकर चुरा लेते हैं।

घर बसा नहीं, चोर पहले आ गए...पज़ेशन से पूर्व 'खाली' किए 37 फ्लैट

■ NBT रिपोर्ट, गुड़गांव

शहर के सेक्टर-93 में स्थित मधेट प्लाजा सोसायटी में गजब की वारदात हो गई। यहां अभी फ्लैट्स का निर्माण चल रहा है। कुछ फ्लैट फुली फर्निश्ड हैं। परिवारों को पजेशन मिलना बाकी है, लेकिन इससे पहले ही यहां चोर आ पहुंचे। सोसायटी के 37 फ्लैटों से करीब 40 लाख का सामान चुरा लिया। तीन आरोपी पकड़े गए तो पता चला कि यहां से 37 एसी, 13 एलईडी टीवी, तीन फ्रिज, दो माइक्रोवेव चोरी कर सारा सामान एक गोदाम में रख लिया गया था। आरोपियों ने सोचा था कि जल्दी ही यह सामान बेच देंगे, लेकिन इससे पहले सभी पकड़े गए। सेक्टर-93 चौकी इंचार्ज एसआई प्रदीप कुमार की टीम ने आरोपियों से करीब 40 लाख रुपये के सामान के अलावा एक पिकअप गाड़ी भी बरामद की है।

40 लाख रुपये की चोरी की, सामान बेचने से पहले पकड़े गए : अरेस्ट किए गए आरोपियों में साने आलम निवासी बरेली और ताराचंद निवासी बदायूं, यूपी है। साने आलम और साहिक गुड़गांव में कबाड़ खरीदने का काम करते हैं, जबकि ताराचंद पिकअप चालक है। आरोपियों ने पूछताछ में स्वीकार किया कि उन्होंने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर चोरी की साजिश रची थी। सामने आया कि आरोपियों ने बड़ी चालाकी से वारदात की। आरोपियों ने पहले सोसायटी के फ्लैट्स से सामान निकाला और उसे वहीं बेसमेंट में इकट्ठा कर लिया। इसके बाद 5 और 6 फरवरी की रात को ताराचंद की पिकअप गाड़ी में सारा सामान लादकर मानेसर स्थित एक कबाड़ी के गोदाम में पहुंचा दिया। आरोपी इस सामान को बेचने की फिराक में थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें दबोच लिया।

आरोपियों में दो कबाड़ खरीदते हैं, तीसरा पिकअप चालक है

कैग के पूर्व अधिकारी को छह घंटे डिजिटल अरेस्ट कर 2 करोड़ ठगे

■ NBT रिपोर्ट, फरीदाबाद : **सेक्टर-64** सी में रहने वाले एक रिटायर्ड कैग (Comptroller and Auditor General of India) अधिकारी को साइबर ठगों ने करीब 6 घंटे तक 'डिजिटल अरेस्ट' में रख उनके खातों से 2 करोड़ 16 लाख रुपये ट्रांसफर करवा लिए। ठगों ने डराने के लिए मुंबई क्राइम ब्रांच में दर्ज फर्जी एफआईआर की कॉपी भी वॉट्सऐप पर भेजी। साथ ही अधिकारी की पत्नी के बैंक खाते को मनी लॉन्ड्रिंग से जोड़ते हुए गिरफ्तारी और जांच के नाम पर रकम जमा कराने का दबाव बनाया। ठगी का अहसास होने पर पुलिस को शिकायत दी।

पत्नी के मोबाइल पर आया था कॉल : सेक्टर-64 सी निवासी सीनियर सिटीजन ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 13 जनवरी को उनकी पत्नी के मोबाइल पर कॉल आया। उसने खुद को टेलिकॉम विभाग का अधिकारी बताते हुए कहा कि उनके आधार कार्ड से जुड़े एक बैंक खाते में नरेश गोयल नामक व्यक्ति से 20 लाख रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग की रकम आई है। ठगों ने 30 को सुप्रीम कोर्ट के नाम से एनओसी और पीसीसी लेटर भेज मनी लॉन्ड्रिंग केस से बरी किए जाने का दावा किया।

AI Image

गलत तरीके से रकम मंगवाने का आरोप

पीड़ित अधिकारी ने बताया कि ठगों ने कथित सबूत होने का दावा किया और कहा कि गलत तरीके से कमाई गई रकम उनके खाते में मंगवाई गई है। डर के कारण पत्नी ने फोन पति को दे दिया। इसके बाद ठगों ने खुद को मुंबई क्राइम ब्रांच का अधिकारी बताते हुए वॉट्सऐप विडियो कॉल शुरू की। मोबाइल को लगातार फुल चार्ज पर रखने के निर्देश दिए।

घर से बाहर न जाने की दी धमकी

पीड़ित अधिकारी ने बताया कि ठगों ने वॉट्सऐप पर पत्नी के नाम का एटीएम कार्ड, नरेश गोयल के नाम से जुड़े दस्तावेज, मुंबई क्राइम ब्रांच, सीबीआई और ईडी के कथित कागजात भेजे। इन दस्तावेजों में पत्नी के बैंक खाते को मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल बताया गया। करीब 2 करोड़ रुपये के लेन-देन का जिक्र किया गया। कहीं बाहर न जाने की दी धमकी।

प्रेग्नेंसी में बढ़ती शुगर को लेकर रहें अलर्ट

indiapicture

प्रेग्नेंसी में बढ़ती शुगर (जेस्टेशनल डायबिटीज) के मामले बढ़ रहे हैं, लेकिन सही जांच, खानपान और देखभाल से मां-शिशु दोनों सुरक्षित रह सकते हैं। ऐसे में क्या करना है और क्या नहीं, एक रिपोर्ट:

Saroj.Dhuliya@timesofinda.com

प्रेग्नेंसी के दौरान ब्लड शुगर बढ़ना यानी जेस्टेशनल डायबिटीज आज कई महिलाओं में देखने को मिल रही है। हालांकि सही समय पर जांच, संतुलित खानपान, नियमित व्यायाम और डॉक्टर की सलाह से इसे अच्छी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, सही मैनेजमेंट अपनाने पर मां और शिशु दोनों सुरक्षित रह सकते हैं और स्वस्थ डिलीवरी संभव है।

प्रेग्नेंसी मे क्यो बढ़ती है शुगर?

दिल्ली डायबिटीज एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार झिंगन बताते है कि कई महिलाओं को गर्भधारण से पहले डायबिटीज नहीं होती, लेकिन प्रेग्नेंसी के दौरान जांच में शुगर बढ़ी हुई मिलती है। इसे जेस्टेशनल डायबिटीज कहते है। इसलिए इस दौरान नियमित टेस्ट बहुत जरूरी है। फिजिशियन डॉ. संजय महाजन के अनुसार, गर्भावस्था मे प्लेसेंटा से बनने वाले हार्मोन इंसुलिन के काम में बाधा डाल सकते है। इससे शरीर में इंसुलिन रेजिस्टेंस बढ़ता है और ब्लड शुगर का स्तर बढ़ने लगता है।

जेस्टेशनल डायबिटीज आमतौर पर प्रेग्नेंसी के 24-28 हफ्तो मे विकसित होती है

मां-बच्चे पर असर!

प्रेग्नेंसी के दौरान लगातार शुगर का बढ़ा रहना मां-बच्चे के लिए परेशानी बन सकता है। डॉ. अशोक कुमार झिंगन कहते है, "अगर गर्भावस्था मे शुगर लंबे समय तक बढ़ी रहे, तो मां और शिशु दोनों को नुकसान हो सकता है। डिलीवरी मे दिक्कत, हाई ब्लड प्रेशर या सिजेरियन की संभावना बढ़ जाती है। डॉ. संजय महाजन बताते है, 'मां के खून मे ज्यादा ग्लूकोज प्लेसेंटा के जरिए गर्भ मे बच्चे तक पहुंचता है। इससे बच्चा सामान्य से बड़ा हो सकता है, जिससे बच्चे की डिलीवरी मे मुश्किले खड़ी हो सकती है। जन्म के बाद बच्चे मे लो शुगर, सांस की दिक्कत या पीलिया जैसी समस्याएं दिख सकती है। हालांकि समय पर पहचान और इलाज से इन जोखिमो को काफी कम किया जा सकता है। बस जरूरत है आपको अलर्ट रहने की।

किन महिलाओ को ज्यादा खतरा?

- परिवार में डायबिटीज की हिस्ट्री हो।
- घर में पहले जेस्टेशनल डायबिटीज रह चुकी हो।
- वजन ज्यादा हो या पीसीओडी की समस्या हो।
- बार-बार गर्भपात या प्रेग्नेंसी में दिक्कत रही हो।

बचाव कैसे करें?

- फाइबर-युक्त आहार (हरी सब्जियां, साबुत अनाज) ज्यादा लें।
- रोज व्यायाम या वॉक करें।
- वजन कंट्रोल में रखें।
- डॉक्टर की सलाह से शुगर टेस्ट कराएं।
- जरूरत हो, तो इंसुलिन या दवा लें।
- पर्याप्त नींद लें और तनाव से बचें।

AI Image

बच्चे को हो स्क्रीन की लत, तो सही दिशा देना जरूरी

AI Image

आज के डिजिटल दौर मे बच्चों का स्क्रीन की ओर आकर्षित होना सामान्य है, लेकिन ज्यादा स्क्रीन टाइम उनकी सेहत, व्यवहार और सामाजिक विकास पर असर डाल सकता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, सिर्फ स्क्रीन से रोकना काफी नही, बल्कि उन्हें अच्छे और क्रिएटिव ऑप्शन देना ज्यादा जरूरी है।

- **पॉजिटिव डायरेक्शन देना जरूरी:** दिल्ली स्थित सीके बिड़ला हॉस्पिटल मे डायरेक्टर (नियोनेटोलॉजी और पीडियाट्रिक्स) डॉ. पूनम सिदाना बताती है कि जब बच्चों मे स्क्रीन की लत के संकेत दिखें, तो बार-बार रोकने के बजाय उन्हें वैकल्पिक गतिविधियों की ओर प्रेरित करें। जैसे स्क्रीन मत देखो कहने के बजाय चलो बाहर खेलते है, किताब पढ़ते है या साथ मे कोई गेम खेलते है, कहना ज्यादा असरदार होता है। बच्चे इस तरह की भाषा को जल्दी समझते है।
- **स्क्रीन टाइम को समझना जरूरी:** सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि बच्चा दिन मे कितना समय स्क्रीन पर बिताता है, क्या देखता है और स्क्रीन बंद होने पर उसका व्यवहार कैसा रहता है। यही जानकारी आगे सही योजना बनाने मे मदद करती है।
- **घर मे तय करें स्क्रीन नियम:** डॉ. सिदाना के अनुसार, घर मे एक रूटीन होना जरूरी है। स्क्रीन टाइम की सीमा तय करें और डाइनिंग टेबल या बेडरूम जैसी जगहों को 'नो स्क्रीन जोन' बनाएं। पैरेंट्स खुद भी उदाहरण पेश करें, क्योंकि बच्चे वही सीखते है, जो घर मे देखते है।
- **विकल्प और एक्टिविटी बढ़ाएं:** बच्चों को खेलकूद, ड्राइंग, पजल, किताबें, हॉबी या फ्री प्ले जैसे विकल्प देना जरूरी है। न्यूक्लियर फैमिली मे 3-4 परिवार मिलकर बच्चों के लिए प्ले ग्रुप बना सकते है, जिससे बच्चों को सोशल और भावनात्मक जुड़ाव का मौका मिलता है और स्क्रीन पर निर्भरता कम होती है।
- **कारण समझना भी जरूरी:** साइकोलॉजिस्ट अर्चना माहेश्वरी के अनुसार, बच्चे कई बार बोरियत, अकेलापन, खेलने की जगह की कमी या माता-पिता के व्यस्त रहने के कारण ज्यादा स्क्रीन की ओर आकर्षित होते है। इन वजहों को समझना ही सही समाधान की शुरुआत है।
- **धीरे-धीरे बदलती है आदत:** स्क्रीन की लत कम करना एकदम से संभव नहीं होता। जागरूकता, नियमित दिनचर्या, सकारात्मक सहयोग और परिवार के साथ से बच्चे स्क्रीन का संतुलित व स्वस्थ इस्तेमाल सीख सकते है।

Advertorial, Entertainment
Promotional Feature

Enterटेनमेंट masalamix

मीरा के साथ हर दिन वैलेंटाइंस डे मनाता हूं: शाहिद

उपमा सिंह

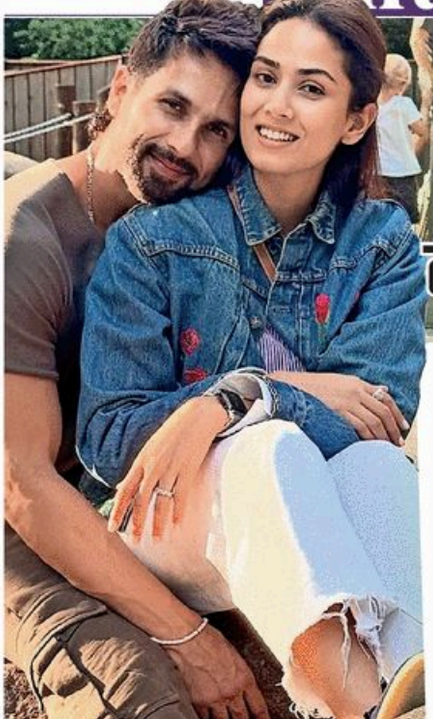

इश्क विश्क जैसी रोमांटिक फिल्म से अपना ऐक्टिंग करियर शुरू करने वाले ऐक्टर शाहिद कपूर इन दिनों अपनी जुनूनी प्रेम कहानी वाली गैंगस्टर ड्रामा ओ रोमियो को लेकर चर्चा में है। शाहिद की यह फिल्म वैलेंटाइंस डे पर रिलीज हो रही है, पर शाहिद खुद प्यार के लिए कोई एक दिन तय नहीं मानते। उनका कहना है कि वह अपनी पत्नी मीरा के साथ हर रोज वैलेंटाइंस डे मनाते है।

रोज याद दिलाता हूं, मीरा कितनी स्पेशल हैं

नवभारत टाइम्स से खास बातचीत के दौरान शाहिद ने शादी को 10 साल बाद वैलेंटाइंस डे की अहमियत पर बात करते हुए कहा, 'मैं अपनी बीवी के साथ हर दिन वैलेंटाइंस डे मनाता हूं। मेरा मानना है कि वह इतनी स्पेशल है कि मुझे हर दिन उन्हें याद दिलाना चाहिए कि वो मेरे लिए कितनी मायने रखती है।'

असल जिंदगी में लोग ग्रे ही होते हैं

करियर के शुरुआत में चॉकलेटी बॉय वाली इमेज रखने वाले शाहिद ने कमीने, उड़ता पंजाब, हैदर जैसी फिल्मों में ग्रे किरदारों में मजबूत छाप छोड़ी है। ओ रोमियो में भी वह गैंगस्टर हुसैन उस्तरा की ग्रे भूमिका में है। ऐसे रोल पर वह कहते है, 'इस तरह की भूमिकाएं हमें बतौर ऐक्टर खुद को खोजने का मौका देती है। मुझे लगता है कि जिंदगी में लोग ग्रे ही होते है। कई बार लोग अपने बारे मे यह बात नहीं मानते, लेकिन उनके दोस्त और रिश्तेदार बताते है। कभी उनके बच्चे बड़े होकर बताते है कि आपने ऐसा किया था, वैसा किया था। हम सब वैसे होते है। हम सभी के अंदर एक ग्रे साइड होता है। जैसे विशाल सर (फिल्ममेकर विशाल भारद्वाज) हमेशा कहते हैं और मुझे भी ऐसे ही लगता है कि फिल्मों में किरदार खुद को एक्सपोज करता है। वह आपको अपनी सच्चाई दिखाता है। मैं कितना अच्छा हूं, ये बताने वाला करैक्टर करना ऐक्टिंग नहीं होती है। वो कुछ और होता है। ऐक्टिंग वही होती है, जब आप करैक्टर के हर पहलू को ऑडियंस को दिखाने से कतराते नहीं है। जो अच्छा-बुरा जो है, उसे ईमानदारी से दिखा देते है और मुझे लगता है कि आज ऑडियंस इतनी मैच्योर है कि वह इस चीज को सराहती है।'

फिल्में एक्सप्रेस करने का जरिया

कई ऐक्टर्स ये भी कहते है कि जो चीजें वे रियल लाइफ में नहीं कर सकते, उसे पर्दे पर दिखाने में एक अलग सुख होता है। शाहिद इस पर कहते है, 'मेरी ऐक्टर बनने की वजह यह नहीं थी कि मैं जो चीजें असल जिंदगी में नहीं कर सकता, वह पर्दे पर करना है तो मुझे ऐक्टर बनना है। मुझे फिल्मों और ऐक्टिंग से मोहब्बत थी, अभी भी है। मुझे लगता है कि ऐक्टिंग में आपको एक मौका मिलता है अपने आपको एक्सप्लोर करने का, जिंदगी में जो भी आपने अनुभव किए है, उसे एक्सप्रेस करने का। क्रिएटिव लोग जो होते है, उन्हें एक जरिया मिल जाता है उसे एक्सप्रेस करने का। हमारे (क्रिएटिव लोगों के) लिए एक्सप्रेस करना जरूरी होता है।'

> मैं अपनी बीवी के साथ हर दिन वैलेंटाइंस डे मनाता हूं। मेरा मानना है कि वह इतनी स्पेशल है कि मुझे हर दिन उन्हें याद दिलाना चाहिए कि वो मेरे लिए कितनी मायने रखती है।

जो फिल्में दर्शकों के दिलों को छूती हैं, वे याद रह जाती हैं

देवदास से लेकर लैला मजनू और कबीर सिंह तक, इश्क में खुद को तबाह करने वाली जुनूनी प्रेम कहानियां बॉलिवुड फिल्मों में काफी देखी जाती है। क्या असल जिंदगी में प्यार इस कदर जुनूनी होता है या बॉलिवुड इसे रोमांटिसाइज ज्यादा करता है? इस सवाल पर शाहिद का कहना है, 'जो चीजें आक्रामक होती है, वो ज्यादा उभरकर आती है। हर चीज का एक असर होता है। फिल्मों के मामले में भी ऐसा ही है। जो फिल्में ज्यादा गहरी होती है, भावनात्मक रूप से मजबूत होती है, वे अंदर तक जाकर आपके दिल को चीरकर आपको कुछ फील करा देती है। हल्की फुल्की फिल्मों में वह बात महसूस नहीं होती। हल्की फुल्की फिल्में देखकर कुछ टाइम बाद आप उसे भूल जाते है। जबकि, कुछ ऐसी फिल्में होती है जो अंदर तक आपको छू जाती है, गहराई वाला अनुभव देती है। आपके मन में एक छाप छोड़ जाती है, इसलिए वे आपको ज्यादा याद रह जाती है।'

'आमिर, शाहरुख और सलमान के अंदाज जुदा, पर जूनून एक'

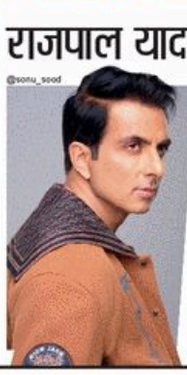

सलमान, आमिर और शाहरुख खान के साथ काम करने के अपने अनुभव एक बातचीत में रानी मुखर्जी ने साझा किए है। उन्होंने बताया कि तीनों सुपरस्टार्स का काम करने का अंदाज भले अलग है, पर सिनेमा के लिए उनका जुनून एक जैसा है। रानी ने 1998 में आई फिल्म गुलाम में आमिर खान के साथ काम किया था। उन दिनों को याद करते हुए रानी ने कहा कि आमिर हर सीन और हर शॉट को लेकर बहुत सीरियस रहते है। बकौल रानी, उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में आमिर से प्रोफेशनलिज्म और परफॉर्मेंस की बारीकियां सीखीं। शाहरुख के लिए उन्होंने कहा, 'वे बेहद संवेदनशील और केयरिंग इंसान है। मैं जब बहुत छोटी थी, तब भी शाहरुख ने मुझे हमेशा एक बच्चे की तरह प्रोटेक्ट किया। आज भी शाहरुख मुझे प्यार से बेबी कहकर बुलाते है।' वहीं सलमान खान के साथ काम करने को रानी ने बिलकुल अलग अनुभव बताया। उनके मुताबिक, 'सलमान का स्टाइल बिंदास और कैजुअल है। देखने में लगता है कि वह बहुत रिलैक्स है, पर असल में वह अपने काम के लिए काफी मेहनत करते है। सलमान का स्वैग व हैंडसम पर्सनैलिटी उनकी मेहनत को

> भले ही आमिर, शाहरुख और सलमान का काम करने का तरीका अलग-अलग हो, लेकिन तीनों सिनेमा को लेकर बेहद पैशनेट है और यही बात उन्हें खास बनाती है। तीनों के साथ काम करके मैंने कुछ न कुछ सीखा है।

राजपाल यादव को काम देंगे सोनू सूद

@sonu_sood

राजपाल यादव एक पुराने चेक बाउंस मामले में तिहाड़ जेल में है। अब सोनू सूद उनकी मदद के लिए आगे आए है। सोनू ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'राजपाल एक बेहद टैलेंटेड ऐक्टर है जिन्होंने इंडस्ट्री को कई यादगार किरदार दिए है। कभी-कभी जिंदगी टैलेंट की वजह से नहीं, बल्कि हालात के चलते मुश्किल हो जाती है।' सोनू ने यह भी ऐलान किया कि राजपाल उनकी आने वाली फिल्म का हिस्सा होंगे। 'खबरों के मुताबिक, राजपाल ने तिहाड़ जेल में सरेंडर करते हुए कहा था, 'सर, क्या करूं? मेरे पास पैसे नहीं है। यहां सब अकेले है, कोई दोस्त नहीं होता।' वहीं गुरमीत चौधरी व तेज प्रताप यादव ने ऐक्टर की मदद की पेशकश की है।

CCI NG 3.7 Product: DelhiMasalamixBS PubDate: 11-02-2026 Zone: TIMSTHA Edition: 1 Page: HDTHAFP User: cci Time: 02-10-2026 23:28 Color:

रानी बोली, आमिर, शाहरुख और सलमान के अंदाज जुदा, पर जुनून एक p4

NBT गाज़ियाबाद THA Times OF INDIA
नवभारत टाइम्स । गाजियाबाद । बुधवार, 11 फरवरी 2026

खो-खो में तृतीय रहने पर किया सम्मानित P2

तीन बहनों की सामूहिक आत्महत्या का दोषी आखिर कौन?

पिता की विलासिता भरी जिंदगी और उधार पर चल रहा जीवन, 2 पत्नियों के भूलने की बीमारी के बाद तीसरी अंतरधार्मिक शादी बनी आत्महत्या का कारण?

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

भले ही तीन बहनों के सामूहिक स्यूसाइड केस में पुलिस लगातार कभी परिवार, कभी रिश्तेदार और कभी पड़ोसियों से पूछताछ कर रही है। इस पूरी पूछताछ में रोज हो रहे नए खुलासों से कहीं न कहीं लगता है कि बेटियों के मरने के पीछे पूरा परिवार ही दोषी है। पिता अपना भोग विलास से भरा जीवन जी रहा था, जबकि पत्नियां कम पढ़ी लिखी हैं और उन्हें भूलने की बीमारी भी है। ऐसे में वह बेटियों पर ध्यान ही नहीं दे पाईं। इसके चलते तीनों बहनें मोबाइल की एडिक्ट हो गईं। ऐसे में जब पिता ने लत छुड़ाने के लिए मोबाइल छीने, तो वह बर्दाश्त नहीं कर पाईं और आत्महत्या कर ली। हालांकि अभी पुलिस किसी नतीजे पर नहीं पहुंची है कि आखिरकार इस घटना के लिए किसे दोषी ठहराएं। डीसीपी निमिष पाटिल का कहना है कि अभी जांच जारी है।

बता दें कि 3 फरवरी की रात तीन बहनों ने एक साथ सामूहिक आत्महत्या कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। शुरुआती जांच में आत्महत्या के जो कारण सामने आए, वह शहर ही नहीं बल्कि पूरे देश को परेशान करने के लिए काफी थे। देशभर के लोग अब अपने बच्चों की ओर देखने लगे हैं कि कहीं वह तो मोबाइल एडिक्शन की ओर तो नहीं बढ़ रहे। पुलिस ने मामले में सोमवार रात पूछताछ के लिए तीन बहनों के नाना, मौसी और मौसा को बुलाया था।

महीनों से नहीं दिया दोनों फ्लैट का किराया

पुलिस की जांच में पता चला है कि पिता की आर्थिक स्थित ठीक नहीं थी, जिसकी वजह से वह ऑफिस वाले फ्लैट का किराया छह माह से नहीं दे पाया था। वहीं, जिस फ्लैट में परिवार अभी रहता है उसका किराया भी तीन माह से नहीं दे पा रहा था। जबकि पिता ने मीडिया को बताया था कि उसकी आर्थिक स्थिति ठीक है। ऐसे में पुलिस पिता के बैंक खातों की डिटेल मिलने का इंतजार कर रही है।

तीसरी पत्नी ने भी कुछ दिन बाद ध्यान देना छोड़ा

सोमवार रात को पुलिस ने बच्चियों के नाना और मौसी-मौसा से करीब तीन घंटे तक पूछताछ की। इस दौरान पुलिस को पता चला कि बच्चियों के पिता ने जिन दो बहनों से शादी की, वह पांचवीं पास हैं और उन्हें भूलने की बीमारी भी है। ऐसे में वह बच्चियों का ध्यान ठीक से नहीं रख पा रही थीं। ऐसे में बच्चियों का ध्यान रखने के लिए उसने मुस्लिम लड़की से तीसरी शादी की। शुरुआती दौर में उसने थोड़ा बहुत ध्यान दिया, लेकिन बाद में उसने भी बच्चियों पर ध्यान देना बंद कर दिया और सभी को मोबाइल की लत लग गई।

12वीं पास थी तीसरी पत्नी, इसलिए की शादी

पिता ने जिस लड़की को अपने यहां जॉब पर रखा था। वह 12वीं तक पढ़ी है और पिता ने भी 12वीं तक ही पढ़ाई की है। युवती क्लाइंट से अच्छे से बात कर लेती थी। ऐसे में पिता ने उससे तीसरी शादी का प्रस्ताव रखा। इसका दोनों पत्नियों ने विरोध किया, तो उन्हें बताया कि वह पढ़ी लिखी है और बच्चों की देखभाल ठीक से कर लेगी, जिससे उनकी पढ़ाई-लिखाई अच्छे से हो जाएगी।

दूसरे धर्म में की शादी, तो परिजन ने बनाई थी दूरी

2018 में एक साली की मौत के बाद ससुराल के लोगों ने बच्चियों के पिता से दूरी बना ली थी। वहीं, तीसरी शादी दूसरे धर्म में करने पर पिता के भाइयों और परिजनों ने भी दूरी बना ली। उन्होंने कहा कि जब दो शादी हो रखी हैं, तो तीसरी की क्या जरूरत है?

एक बहन की शादी बच्चियों के ताऊ से हुई : पुलिस की जांच में पता चला है कि 2 बहनों की शादी बेटियों के पिता से हुई। वहीं, एक अन्य बहन की शादी बच्चियों के पिता के बड़े भाई से हुई है, जो दिल्ली में रहती है।

हेल्पलाइन नंबर 24/7
पुलिस कंट्रोल रूम 0120-2820758
ट्रैफिक कंट्रोल रूम 9643322904
नगर निगम गाजियाबाद हेल्पलाइन नंबर-टोल फ्री नंबर 1800 1803 012
विद्युत विभाग इमरजेंसी 9193320115
डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल इमरजेंसी 8826294546
फायर कंट्रोल 0120-2777102 9454418348

NBT से जुड़ें
अपने सेक्टर, सोसायटी, कॉलोनी, स्कूल-कॉलेज या संस्थान से जुड़ी कोई खबर एनबीटी तक पहुंचाना चाहते हैं तो 9266462955 पर वॉट्सऐप करें। QR कोड स्कैन करके भी मेसेज भेज सकते हैं। अपना और इलाके का नाम लिखें। शुरुआत में #GZB लिखें।

पिकअप चालक को बचाने में DME पर 2 ट्रक ड्राइवरों की मौत

- सेक्टर-62 के पास दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर हादसा, 3 गंभीर
- जिन लोगों की मौत हुई, वे खुद दूसरे को बचाने के लिए वहां रुके थे
- हादसे के बाद अफरातफरी मच गई, ट्रैफिक जाम लगा रहा
- सूचना मिलते ही पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची

■ NBT रिपोर्ट, नोएडा

सेक्टर-62 के पास दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर सोमवार देर रात एक के बाद एक हुए सड़क हादसों ने दो लोगों की जान ले ली, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन लोगों की मौत हुई, वे खुद किसी की जान बचाने के लिए रुके थे। हादसे के बाद हाइवे पर अफरातफरी मच गई और काफी देर ट्रैफिक जाम लगा रहा। पहले DME पर खड़े एक ट्रक से पिकअप पीछे से जा टकराई। पिकअप ड्राइवर गाड़ी में फंस गया। उसे निकालने के लिए तीन ट्रक ड्राइवर सामने आए। तभी एक अन्य तेज रफ्तार ट्रक आई और पांच से छह लोगों को रौंद दिया। दो ड्राइवरों की मौत हो गई। सेक्टर 58 थाने की पुलिस ने आरोपी चालक को हिरासत में लिया है।

पिकअप वाहन पीछे से खड़े ट्रक से टकरा गया

एडीसीपी मनीषा सिंह ने बताया कि सेक्टर-62 के पास दिल्ली-मेरठ हाइवे पर मेरठ से दिल्ली की ओर आने वाली बीच की लेन में एक सड़क दुर्घटना हुई थी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची। मौके पर पहुंचकर पुलिस ने देखा कि एक पिकअप वाहन पीछे से एक ट्रक से टकरा गया था। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि पिकअप का ड्राइवर अमित वाहन के अंदर बुरी तरह फंस गया था और बाहर निकलने निकल नहीं पा रहा था।

मदद को आगे आए 3 ट्रक ड्राइवरों को रौंद दिया

हादसे को देखकर पीछे से आ रहे तीन ट्रक चालकों ने इंसानियत दिखाते हुए अपने-अपने ट्रक सड़क किनारे खड़े कर दिए और पिकअप में फंसे ड्राइवर को बाहर निकालने की कोशिश में जुट गए। इसी दौरान अचानक पीछे से आ रहा एक तेज रफ्तार ट्रक ने उन तीनों ट्रक चालकों को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि तीनों चालक दूर जा गिरे।

हादसे के बाद कई किलोमीटर तक लगा जाम

हादसे के बाद दिल्ली-मेरठ हाइवे पर लंबा जाम लग गया। कई किलोमीटर तक वाहनों की कतारें लग गईं। पुलिस ने एनएचएआई की क्रेन की मदद से दुर्घटनाग्रस्त ट्रकों को हटवाया और सुरक्षित स्थान पर खड़ा कराया। इसके बाद जाकर यातायात धीरे-धीरे सामान्य हो सका। पुलिस ने हादसे के आरोपी सब्जी से लदे ट्रक के चालक को हिरासत में ले लिया है।

3 अस्पताल में भर्ती

घायल तीनों ट्रक चालकों को पुलिस और स्थानीय लोगों ने अस्पताल पहुंचाया। इलाज के दौरान देवेंद्र (34) निवासी शाहजहांपुर और गोविंद चौहान (35) निवासी आजमगढ़ की मौत हो गई। घायल वीरेंद्र (24), साहिल और हरिओम (35) का अस्पताल में इलाज चल रहा है।

इलाज के बाद मिली छुट्टी

पुलिस ने बताया कि पिकअप चालक अमित के शरीर ऊपरी हिस्से पर चोट आई है। घटना के दौरान वाहन पिचक गया था, जिसमें अमित फंस गया था। उसका इलाज गाजियाबाद के एक अस्पताल में चला और मंगलवार दोपहर उसे डॉक्टरों ने छुट्टी दे दी।

5 साल में 2 हजार से अधिक लोगों की सड़क हादसों में मौत

	2021	2022	2023	2024	2025
हादसे	798	1122	1176	1165	1309
घायल	559	856	858	966	975
मौत	368	437	470	462	521

खबर छपी तो नगर निगम ने भरा पाइपलाइन लीकेज से बना गड्ढा

■ NBT रिपोर्ट, वसुंधरा

सेक्टर-17 स्थित कोणार्क एन्क्लेव सोसायटी के सामने पाइपलाइन लीकेज से बने जानलेवा गड्ढा नगर निगम ने भर दिया है। यह खबर रविवार को नवभारत टाइम्स में प्रमुखता से प्रकाशित की गई थी। लगातार हादसों की आशंका को देखते हुए स्थानीय लोगों ने इस समस्या को लेकर शिकायत की थी, जिस पर एनबीटी में खबर छपते ही नगर निगम हरकत में आ गया। ऐसे में गड्ढे भरने के बाद क्षेत्रवासियों ने राहत की सांस ली और इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाने के लिए नवभारत टाइम्स का आभार जताया। निवासी संजय अवस्थी ने एनबीटी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि लगभग महीने भर से गड्ढा जानलेवा बना हुआ गया था, जिससे हादसे की आशंका बनी हुई थी। मालूम हो कि इस स्थान पर करीब 8 से 10 महीने पहले पेयजल पाइपलाइन डाली गई थी, लेकिन घटिया निर्माण सामग्री और ठेकेदारों की लापरवाही के चलते पुरानी पाइपलाइन से दोबारा लीकेज होने लगी। इसके बाद से लगातार पानी बहने से वहां पर गहरा गड्ढा बन गया था।

NBT असर

डॉक्टर पर युवती से छेड़छाड़ का आरोप

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : इंदिरापुरम स्थित रुचाली डेंटल क्लिनिक के चिकित्सक पर दिल्ली निवासी एक युवती ने छेड़खानी का आरोप लगाया है। आरोप है कि विरोध करने पर उसने उस पर और उसके भाई पर हमला कर दिया और फरार हो गया। युवती की शिकायत पर नौ फरवरी को पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। दिल्ली निवासी एक युवती का कहना है कि वह रुचाली डेंटल क्लीनिक में गई थी। जहां डॉ. रजनीश ने उसके साथ छेड़खानी की।

> विरोध करने पर युवती और उसके भाई से मारपीट करने का भी आरोप

मंदिर से चांदी की मूर्ति, दानपात्र से चोरी

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : टीलामोड़ के प्राचीन बाबा रामपुरी मंदिर में घुसे चोरों ने चांदी की मूर्ति और दानपात्र से नकदी चोरी कर ली। मंगलवार को जब चोरी का पता चला तब उन्होंने पुलिस से शिकायत की। वहीं, मंदिर में चोरी की वारदात के बाद से लोगों ने रोष व्यक्त किया है। अब्दुल्लापुर गांव के मंदिर में मंगलवार सुबह जब लोग पूजा के लिए पहुंचे तो अंदर से चांदी की मूर्ति और कलश चोरी हो चुका था। वहीं, पास में लगे दानपात्र का ताला भी टूटा हुआ था। पुजारी ने बताया कि दानपात्र में करीब 50-60 हजार रुपये की नकदी थी।

> पुजारी बोले- दानपात्र में थी करीब 50-60 हजार रुपये की नकदी

SUV सवार युवकों ने पूर्व मंत्री पर किया हमला

इसी गाड़ी से आ रहे थे पूर्व मंत्री

दबंगई

- वैवाहिक समारोह से लौट रहे थे, फायरिंग की, लेकिन गोली तमंचे में फंस गई
- गनर के मोर्चा लेने पर भागे हमलावर, उसने दो राउंड हवाई फायर किए
- गाजियाबाद निवासी गाड़ी मालिक कारोबारी को गिरफ्तार किया गया

■NBT न्यूज, हापुड़

गढ़ से तीन बार विधायक रहे और पूर्व मंत्री **मदन चौहान** पर सोमवार देर रात उस समय हमला हुआ जब वह एक वैवाहिक कार्यक्रम से लौट रहे थे। हापुड़-दिल्ली बाईपास रोड पर हिरणपुरा के पास रोड किनारे फॉर्च्यूनर को खड़ा कर तीन युवकों ने पहले पूर्व मंत्री की इनोवा रोकने का प्रयास किया और गाड़ी धीमी हुई तो फायरिंग कर दी। हालांकि, गोली मिस हो गई। जब तक बदमाश दूसरी गोली चलाने का प्रयास करते चौहान के साथ मौजूद सुरक्षा कर्मी अपनी गन लेकर तेजी से नीचे उतरा। इसे देख हमलावर फॉर्च्यूनर में सवार होकर फरार हो गए। बाद में चौहान ने पूरे घटनाक्रम की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने फॉर्च्यूनर के नंबर के आधार पर गाड़ी मालिक को गिरफ्तार कर लिया। वह गाजियाबाद में मोबाइल फोन का कारोबार करता है। उसका कहना है कि उसकी गाड़ी उसका भांजा इस्तेमाल करता है, जो हापुड़ में प्रॉपर्टी का कारोबार करता है। पूर्व मंत्री पर हमला क्यों किया गया, इस बारे में पुलिस ने कोई और जवाब नहीं दिया।

नोएडा में रहने वाले पूर्व मंत्री मदन चौहान सोमवार को गढ़ के ब्रजघाट में एक वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। रात करीब 9:30 बजे उन्हें अपने एक परिचित नितिन कुमार के यहां हिरणपुरा जाना था। वह मेरठ-हापुड़ बाईपास रोड में गांव के पास पहुंचे। वहां फॉर्च्यूनर गाड़ी से उतरकर खड़े तीन युवकों ने उन्हें रुकने का इशारा किया। चौहान ने बताया कि उन्होंने सोचा कि कोई मिलने वाला होगा। गाड़ी धीमी होते ही एक युवक ने उन पर निशाना साधते हुए तमंचे से गोली चला दी। हालांकि, गोली मिस हो गई। इस बीच दूसरे युवक ने गोली चलाने का प्रयास किया। इसी दौरान गनर ने मोर्चा लिया और उसने दो हवाई फायर किए। तीनों आरोपी फॉर्च्यूनर में सवार होकर मौके से फरार हो गए।

फटाफट खबरें

अडिशनल सीपी ने संभाला चार्ज

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : नवनियुक्त अतिरिक्त पुलिस आयुक्त राज करन नैय्यर ने मंगलवार को चार्ज संभाला। पुलिस आयुक्त जे. रविन्द्र गौड और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त मुख्यालय व अपराध केशव चौधरी ने उनका स्वागत किया। अडिशनल सीपी लॉ एंड ऑर्डर व यातायात आलोक प्रियदर्शी के ट्रांसफर के साथ 2012 बैच के आईपीएस राज करन नैय्यर को गाजियाबाद का अतिरिक्त पुलिस आयुक्त बनाकर भेजा गया है। गाजियाबाद में उन्हें अडिशनल सीपी लॉ एंड ऑर्डर व यातायात की जिम्मेदारी दी गई है। यहां से पहले वह गोरखपुर एसएसपी समेत कई जिलों के कप्तान रह चुके हैं।

रिश्वत लेने के आरोप में कर्मचारी निलंबित

■NBT न्यूज, लोनी : ट्रोनिका सिटी में यूपीसीडा कार्यालय में तैनात एक कर्मचारी के घूस लेने के मामले में आरोपी कर्मचारी को निलंबित कर दिया गया। बता दें कि यूपीसीडा कार्यालय में प्लाट ट्रांसफर के नाम पर 17 हजार रुपये की घूस लेते हुए कर्मचारी की वीडियो सामने आया था। यूपीसीडा कार्यालय में तैनात परियोजना अधिकारी सर्वेश पटेल ने कहा कि अधिकारियों के निर्देश पर जगदीश वर्मा को निलंबित किया गया है।

मंडोला सेक्टर-5ए के लिए करवाया ड्रॉ

■NBT रिपोर्ट, टीएचए : उत्तर प्रदेश आवास विकास की तरफ से मंडोला विहार योजना सेक्टर-5ए में विभिन्न प्रकार के 226 स्वचित्त पोषित सेमीफिनिशड भवनों के लिए ड्रॉ निकाला गया। वसुंधरा सेक्टर-16 की सेंट्रल मार्केट स्थित हॉल में ड्रॉ का आयोजन किया गया। इसका रजिस्ट्रेशन पिछले साल 17 जुलाई से 27 अगस्त के बीच में निकाला गया था। इसके लिए 168 आवेदन आए थे। आवास विकास को इससे 72 करोड़ के राजस्व की प्राप्ति हुई।

फरार बदमाश पर 20 हजार का इनाम

■NBT न्यूज, हापुड़ : धान पिलखुवा क्षेत्र के नैशनल हाइवे-9 पर हुई 85 लाख रुपये की लूट में फरार बदमाश पर पुलिस ने 20 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। हाइवे पर 15 दिसंबर को 85 लाख रुपये की लूट हुई थी, जिसमें सात आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। एसपी विनीत भटनागर ने बताया कि घटना में फरार थाना लोनी बार्डर क्षेत्र की मौलाना आजाद कॉलोनी बेहटा हाजीपुर निवासी इरफान उर्फ इरशाद पर इनाम घोषित किया गया है।

हमारा पता
एनबीटी गाजियाबाद
13/1, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-4
email: nbtreader@timesofindia.com

अजमेर शरीफ में मिलीं घर से लापता हुई 8वीं की छात्राएं

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

लिंकरोड के इंद्रापुर इलाके से एक साथ लापता हुई आठवीं की दो छात्राओं को पुलिस ने अजमेर शरीफ से बरामद कर लिया है। थाना पुलिस की टीम दोनों को वापस गाजियाबाद लाई और काउंसलिंग के बाद उन्हें परिजन को सौंप दिया है। वहीं, इंदिरापुरम से लापता हुई 10वीं की छात्रा का अब भी कुछ पता नहीं चल पाया है।

इंद्रापुर निवासी दो छात्राएं स्कूल ड्रेस पहनकर घर से निकली थीं। स्कूल जाने की जगह दोनों अपनी एक सहेली के घर पहुंचीं। जहां दोनों ने कपड़े बदले और निकल गईं। यह बात आठ फरवरी की है। शाम करीब पांच बजे तक जब दोनों घर नहीं पहुंचीं तब परिजनों ने खोजबीन शुरू की। स्कूल से पता चला कि दोनों स्कूल गई ही नहीं थीं। एक साथ दो छात्राओं के लापता होने पर पुलिस भी सक्रिय हुई और तुरंत छानबीन शुरू की गई। 9 फरवरी की शाम एक छात्रा ने अपनी बड़ी बहन को इंस्टाग्राम पर मैसेज करके अजमेर शरीफ में होने की बात बताई। इसके बाद पुलिस को दोनों की लोकेशन मिली। टीम वहां पहुंची और दोनों को वापस लाई।

> एक छात्रा ने सोशल मीडिया पर बड़ी बहन को दी लोकेशन

क्या है समाधान डॉग बाइट के मामलों से परेशान निवासियों ने समस्या से निपटने को की ठोस व्यवस्था की मांग

स्ट्रे डॉग का आतंक, स्टरलाइजेशन-वैक्सीनेशन की मांग

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

ट्रांस हिंडन के इंदिरापुरम, वैशाली, वृज विहार, विधायक कॉलोनी, डेल्टा कॉलोनी और राजनगर एक्सटेंशन से लेकर शालीमार गार्डन तक इन दिनों आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे क्षेत्रवासियों में भय का माहौल बना हुआ है। निवासियों का कहना है कि अस्थायी कार्रवाई से समस्या हल नहीं होगी। स्टरलाइजेशन, वैक्सीनेशन और नियमित मॉनिटरिंग जैसी ठोस व्यवस्था लागू की जाए, जिससे लोगों को राहत मिल सके।

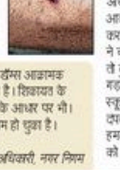

> मौसम के उतार-चढ़ाव और भूखे होने के कारण भी डॉग्स आक्रामक हो जाते हैं। निगम की टीम दो स्तर पर कार्य कर रही है। शिकायत के आधार पर डॉग का स्टरलाइजेशन किया जा रहा है और वॉर्ड के आधार पर भी। इंदिरापुरम के वॉर्ड-100 में 100 प्रतिशत स्टरलाइजेशन का काम हो चुका है। विजय नगर में इस पर काम किया जा रहा है।
> – डॉ. आशीष कुमार, पशु चिकित्सा एवं कल्याण अधिकारी, नगर निगम

केस-1 वैशाली सेक्टर-2 आशीर्वाद ग्रीन सोसायटी में सोमवार देर रात परिसर में टहल रहे अधिवक्ता अभिषेक पर आवारा कुत्तों ने हमला कर दिया। जब अभिषेक ने बचने का प्रयास किया तो कुत्तों ने हाथ में दांत गड़ा दिए। इसी दौरान स्कूटी से जा रहे एक छात्र पर भी कुत्तों ने हमला कर दिया। पुलिस को सूचना दी गई है।

केस-2 इंदिरापुरम की विधायक कॉलोनी निवासी विजय पांडेय को रविवार को आवारा कुत्तों ने काट लिया। घटना के समय पीड़ित पार्क में टहल रहे थे। आरडब्ल्यूए अध्यक्ष अनुपम शुक्ला ने बताया कि लगातार डॉग बाइट की घटनाएं हो रही हैं। कॉलोनी में कुत्तों के झुंड घूमते रहते हैं, लेकिन निगम कोई कदम नहीं उठा रहा है।

केस-3 वृज विहार डबल स्टोरी के हालात और भी चिंताजनक हैं। नितिन गुप्ता के अनुसार, बच्चों ने ट्यूशन तक जाना बंद कर दिया है। हाल ही में एक बच्चे को कुत्ते ने बुरी तरह काट लिया था। वहीं, पशु प्रेमियों पर आरोप है कि वे इधर-उधर खाना खिलाते हैं और निगम की टीम आती है तो डॉग्स को अपने घर में छिपाते हैं।

CCI NG 3.7 Product: DelhiMasalamixBS PubDate: 11-02-2026 Zone: TIMSTHA Edition: 1 Page: HDTHAPG2 User: cci Time: 02-10-2026 23:00 Color:

फटाफट खबरें

JKG इंदिरापुरम ने जीती ओलिंपिक्स ट्रॉफी

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : जेकेजी इंटरनैशनल स्कूल इंदिरापुरम के बच्चों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 2 से 5 फरवरी के बीच में आयोजित जूनियर ओलिंपिक्स-2026 की चैंपियंस ट्रॉफी अपने नाम कर ली है। इस प्रतियोगिता में एनसीआर के 35 से अधिक स्कूलों ने हिस्सा लिया था। इसमें जेकेजी इंदिरापुरम के बच्चों ने 140 पदक जीतकर स्कूल का नाम रोशन किया है। इसमें 75 गोल्ड, 36 सिल्वर और 29 ब्रॉन्ज मेडल शामिल हैं। इस मौके पर स्कूल की प्रिंसिपल निधि गौड़ ने स्टूडेंट्स को उनकी जीत पर बधाई दे कहा कि छात्रों की कड़ी मेहनत का परिणाम है जिसमें स्कूल के ट्रेनर्स के अलावा टीचर्स और पैरेंट्स भी बधाई के पात्र हैं।

चित्रगुप्त मंदिर का 7वां स्थापना दिवस मनाया

■ NBT रिपोर्ट, नेहरू नगर : चित्रगुप्त मंदिर का सातवां स्थापना दिवस अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान चित्रगुप्त की पावन कथा से हुई, जिसे रोमी माथुर ने भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया। कथा के बाद श्री चित्रगुप्त भगवान की विधि-विधान से आरती संपन्न कराई गई। इस अवसर पर मंदिर के पुजारी ने शास्त्रोक्त विधि से पूजा-अर्चना कराई। समाज और राष्ट्र की सुख-शांति, समृद्धि एवं सद्भाव के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। कार्यक्रम में सुधीर माथुर, अश्विनी अंचन, गोकुल व्यास, वीना व्यास, किरण शर्मा, विनोद सक्सेना, नाथ शर्मा और कुलदीप कश्यप मुख्य रूप से मौजूद रहे। पूरे वातावरण में भक्ति, आस्था और उत्साह का भाव देखने को मिला।

लेबर कोड के विरोध में निकाली रैली

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : साइट-4 में सीटू के कार्यकर्ताओं ने मजदूरों के साथ मंगलवार सुबह 4 लेबर कोड्स लागू होने के खिलाफ मोटरसाइकल रैली निकाली। इस रैली के जरिये मजदूरों को लेबर कोड के विरोध में एकजुट होने की अपील की गई। सीटू के जिला सचिव बीकेएस चौहान ने बताया कि यह रैली मजदूर विरोधी चार लेबर कोड्स लागू किये जाने के खिलाफ 12 फरवरी को होने वाली राष्ट्रीय आम हड़ताल की तैयारी तहत की गई। रैली की शुरुआत सीटू के साहिबाबाद स्थित क्षेत्रीय कार्यालय झंडापुर से सुबह आठ बजे शुरू होकर साइट-4 साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र सौर ऊर्जा मार्ग से झंडापुर, कड़कड़ मॉडल, महाराजपुर, कौशांबी बस अड्डा होकर लिंक रोड साहिबाबाद गांव पर समाप्त हुई।

'जातीय भेदभाव मिटाकर एकजुट हो हिंदू'

■ NBT न्यूज, मुरादनगर : रावली रोड स्थित रामलीला मैदान में मंगलवार को विराट हिंदू सम्मेलन हुआ। इसमें जातीय भेदभाव मिटाकर हिंदुओं को एकजुट होकर रहने की अपील की गई। स्वामी दीपांकर ने कहा कि देश समाज में जाट समाज, त्यागी समाज, यादव समाज समेत अलग-अलग जातियों की सभाएं देखी हैं, लेकिन विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन पहली बार हुआ है। उन्होंने कहा कि बस्ती जिले में एक व्यक्ति ने हिंदू समाज की 300 लड़कियों का जीवन बर्बाद कर दिया, इसीलिए आज के समय में सभी हिंदुओं को एकजुट होकर रहना जरूरी है। आरएसएस के विभाग प्रचारक अतुल व सुनील कुमार ने कहा कि पूर्व की सरकारों ने आरएसएस को बंद करने का प्रयास किया था, जबकि आरएसएस एक ऐसा संगठन है, जिसके कार्यकर्ता किसी भी राज्य में प्राकृतिक आपदा आने पर सहायता के लिए सबसे पहले पहुंचते हैं।

मैनापुर इलाके में GDA ने ढहाए अवैध निर्माण

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : शहर में अवैध निर्माण और बिना इजाजत काटी जा रही कॉलोनियों के खिलाफ गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई की है। जीडीए की टीम पुलिस बल के साथ मुरादनगर रेलवे स्टेशन के पास मैनापुर इलाके में पहुंची, जहां अवैध रूप से कॉलोनी बसाई जा रही थी। खसरा संख्या 277, 276 समेत आसपास की जमीनों पर बन रही अवैध बाउंड्रीवॉल, सड़कें और नालियां तोड़ दी गईं। जब बुलडोजर चला तो वहां मौजूद बिल्डरों और निर्माण करने वालों ने जमकर हंगामा और विरोध किया। माहौल बिगड़ता देख प्राधिकरण के पुलिस बल ने मोर्चा संभाला और प्रदर्शनकारियों को हटाकर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई पूरी की। कार्रवाई के दौरान सहायक अभियंता, अवर अभियंता और पुलिस बल रहा।

'पार्कों में सूखी घास की जगह नई लगाएं'

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : पार्कों को बेहतर बनाने के लिए नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने मंगलवार को कवि नगर और सिटी जोन के कई पार्कों का निरीक्षण किया। नगर आयुक्त ने उद्यान विभाग के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि पार्कों की हरियाली किसी भी कीमत पर कम नहीं होनी चाहिए। जहां घास सूख गई है, वहां दोबारा नई घास लगाई जाए और पौधों की समय-समय पर कटिंग हो। उन्होंने कहा कि पार्कों में बने ओपन जिम का फायदा हर उम्र के लोग उठा रहे हैं, इसलिए इनकी देखरेख में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सिद्धार्थ विहार-NH 9 कट पर रोजाना जाम से जूझ रहे लोग

अतिक्रमण और अवैध पार्किंग से सुबह-शाम पीक आवर्स में ज्यादा दिक्कत

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

सिद्धार्थ विहार से नैशनल हाइवे-9 (NH-9) को जोड़ने वाले कट पर अतिक्रमण और अवैध पार्किंग की वजह से वाहन चालकों को रोजाना जाम से जूझना पड़ रहा है। तेजी से विकसित होती आवासीय योजनाओं में से एक होने के बावजूद यहां कनेक्टिविटी बड़ी मुसीबत बन चुकी है। सुबह और शाम पीक आवर्स में यहां की स्थिति इतनी भयावह हो जाती है कि महज 500 मीटर का फासला तय करने में लोगों को 20 से 30 मिनट लग रहे हैं। इस कट पर न केवल सिद्धार्थ विहार के हजारों निवासी निर्भर हैं, बल्कि प्रताप विहार और नोएडा की ओर जाने वाला ट्रैफिक भी इसी बिंदु पर आकर टकराता है। जाम की वजह से ईंधन की बर्बादी हो रही है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि प्रशासन और ट्रैफिक पुलिस की ओर से ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। बुनियादी ढांचे की कमी और वाहनों के बढ़ते दबाव ने इस पूरे स्ट्रेच को बॉटलनेक में बदल दिया है।

समस्या के बड़े कारण

■ **अतिक्रमण :** सिद्धार्थ विहार कट पर जाम केवल संयोग नहीं, बल्कि खराब प्लानिंग और अतिक्रमण का नतीजा है। यह मुख्य कारणों में सबसे प्रमुख है।

■ **बॉटलनेक स्ट्रक्चर :** सिद्धार्थ विहार की ओर से आने वाली चौड़ी सड़क जैसे ही NH-9 के कट पर पहुंचती है, वह सकरी हो जाती है। यह फनल इफेक्ट ट्रैफिक की गति को रोक देता है।

■ **अवैध पार्किंग और ऑटो स्टैंड :** कट के ठीक पास ऑटो और ई-रिक्शा चालकों का अवैध जमावड़ा रहता है। सवारी बैठाने के चक्कर में ये वाहन बीच सड़क पर खड़े होते हैं, जिससे पीछे वाहनों की लंबी कतार लग जाती है।

■ **रॉन्ग साइड ड्राइविंग :** NH-9 पर चढ़ने या उतरने के चक्कर में दुपहिया वाहन चालक अक्सर गलत दिशा (रॉन्ग साइड) से आते हैं, जो न केवल जाम का कारण बनता है, बल्कि हादसों को भी न्योता देता है।

बढ़ती आबादी दो वर्षों में सिद्धार्थ विहार में करीब 20,000 से अधिक नए परिवार शिफ्ट हुए हैं। वाहनों की संख्या में 40 फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है। सड़क का बुनियादी ढांचा वही पुराना है।

यह हो सकता है समाधान

■ **स्लिप रोड का निर्माण :** NH-9 के कट पर एक डेडिकेटेड स्लिप रोड बनाने की जरूरत है, ताकि हाइवे पर जाने वाले वाहन मुख्य ट्रैफिक में बाधा डाले बिना आसानी से मुड़ सकें।

■ **फुट ओवर ब्रिज :** सड़क पार करने वाले पैदल यात्रियों के कारण भी वाहनों की गति धीमी होती है। यहां एक एफओबी बनाकर पैदल यात्रियों और वाहनों के ट्रैफिक को अलग कर सकते हैं।

■ **यू-टर्न की रि-डिजाइनिंग :** मौजूदा कट को थोड़ा आगे या पीछे शिफ्ट करके ट्रैफिक मर्जिंग की समस्या को सुलझाया जा सकता है। साथ ही यहां सिग्नल टाइमिंग को स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (ITMS) से जोड़ने की आवश्यकता है।

■ **एनफोर्समेंट और पेनल्टी :** रॉन्ग साइड आने वालों पर भारी जुर्माना और कट के पास से अतिक्रमण हटाने के लिए स्थायी पुलिस बूथ की स्थापना से काफी हद तक राहत मिल सकती है।

बदलाव है जरूरी एक्सपर्ट की मानें तो जाम की इस समस्या को केवल ट्रैफिक पुलिस की तैनाती से हल नहीं किया जा सकता। इसके लिए इंजीनियरिंग और प्रशासनिक बदलाव की जरूरत है।

पंजाब की हरजिंदर कौर ने 100 किलोग्राम वजन उठाकर बनाया रेकॉर्ड

■ NBT न्यूज, मोदीनगर

काजमपुर मार्ग पर आयोजित राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता के सातवें दिन महिला खिलाड़ियों ने दमखम दिखाया। भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अश्वनी कुमार, भारतीय मुक्केबाजी महासंघ के महासचिव प्रमोद कुमार, एलिको डिस्ट्रीब्यूटर राकेश जालिया ने विजेताओं को पदक पहनाए। प्रतियोगिता आयोजक द्रोणाचार्य अवॉर्डी विजय शर्मा ने बताया कि प्रतियोगिता की आकर्षण का केंद्र पंजाब की हरजिंदर कौर रहीं, जिन्होंने 69 किलो के सीनियर वर्ग में 100 किलोग्राम वजन उठाकर नया रेकॉर्ड अपने नाम किया। जूनियर वर्ग में हरियाणा की तमन्ना ने 96 किलो वजन का भार उठाकर रेकॉर्ड बनाया। यूथ वर्ग में 179 किलोग्राम भार उठाकर रतिका चिंचवाड़े (महाराष्ट्र) प्रथम, डल्ला बाबुला जूलीता गुणा (आंध्र प्रदेश) 174 भार उठाकर द्वितीय और आरती (हरियाणा) ने 165 किलो भार उठाकर तीसरा स्थान प्राप्त किया।

डिस्कस थ्रो में ऋचा ने जीता सिल्वर मेडल

■ NBT न्यूज, गाजियाबाद : एथलीट डॉ. ऋचा सूद ने अपना 14वां अंतरराष्ट्रीय पदक जीता। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप की डिस्कस थ्रो में दूसरा स्थान प्राप्त किया। अबू धाबी में अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स गेम्स संगठन की ओर से आयोजित चैंपियनशिप में रशिया की अलीना शाइमन ने गोल्ड मेडल व रशिया की ही स्वेतलाना पटरेनको ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। चैंपियनशिप में विश्वभर के 25 हजार एथलीट्स भाग ले रहे हैं।

अथर्व कौशिक बने मैन आफ द मैच

■ NBT न्यूज, राजनगर एक्सटेंशन : गिरिराज आईपीएल सीजन-13 के लीग मैच में फेलोशिपस इलेविन ने आसान जीत प्राप्त की। टीम ने रैडर्स को 54 रनों से हराया। गिरिराज क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए मैच में फेलोशिपस इलेविन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 199 रन का स्कोर बनाया। रैडर्स 16.1 ओवर में 145 रन बनाकर आउट हो गया। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार अथर्व कौशिक को दिया गया।

बृज विहार में दूषित जल आपूर्ति से लोग परेशान

■ NBT रिपोर्ट, बृज विहार

सी-ब्लॉक में मंदिर के पीछे स्थित घरों में सोमवार की शाम पानी की सप्लाई बेहद चिंताजनक स्थिति में देखने को मिली। नलों से आने वाला पानी एकदम सफेद रंग का था और इसमें तेज बदबू भी आ रही थी, जिससे स्थानीय निवासियों में सेहत को लेकर चिंता बढ़ गई है। पीड़ित निवासियों का कहना है कि ऐसा ही सफेद और दूषित पानी एक दिन पहले भी आया था, लेकिन जल विभाग की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। लोगों का आरोप है कि इस तरह का पानी उपयोग में लाने से गंभीर बीमारियों का खतरा बना हुआ है। स्थानीय निवासी संदीप शर्मा ने बताया कि पानी ऐसा आ रहा है जैसे किसी ने इसमें डिटर्जेंट घोल दिया हो। वहीं, जलकल विभाग की टीम का कहना है कि अभी तक ऐसी कोई शिकायत नहीं है आई है। निरीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

'घर बैठे बनवाएं फैमिली आईडी'

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : प्रशासन ने शहरवासियों से अपनी फैमिली आईडी (एक परिवार, एक पहचान) बनवाने की अपील की है। आप खुद familyid.up.gov.in पर जाकर या पास के जन सुविधा केंद्र से इसे बनवा सकते हैं। इसके बाद सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे आप तक पहुंचेगा। बार-बार कागजी कार्यवाही और प्रमाणपत्र बनवाने के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। नौकरी और स्किल ट्रेनिंग प्रोग्राम में भी प्राथमिकता मिलेगी। आईडी बनवाते समय ध्यान रखें कि सभी सदस्यों का आधार कार्ड मोबाइल नंबर से लिंक हो, ताकि ओटीपी के जरिए वेरिफिकेशन हो सके। किसी भी जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर 1076 पर कॉल कर सकते हैं।

मंडोला विहार सेक्टर-6 की योजना अटकी

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

मंडोला विहार के सेक्टर-6 में पिछले डेढ़ साल से सेमिफिनिश्ड भवनों का काम किसानों के विरोध के कारण रुका हुआ है। करीब 900 किसान लगातार आवास विकास के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। इसके कारण आवंटी परेशान हैं। बड़ी मुश्किल से किसी तरह किसानों को समझा बुझाकर आवास विकास ने सेक्टर-6 में इन भवनों की योजना का काम जो रुका हुआ था, लेकिन 10 दिन के अंदर दोबारा यह काम बंद हो चुका है। जबकि काम शुरू होते ही आवंटियों ने खराब गुणवत्ता के काम की शिकायत भी की थी। आवास विकास की यह योजना स्ववित्तपोषित मकानों की योजना 2021 में निकाली गई थी। इसमें 252 मकान बनने थे। योजना के तहत आवंटियों को दिसंबर 2024 में ही मकान दिए जाने थे, लेकिन किसानों से विवाद की वजह से करीब ढाई वर्ष तक यह योजना अटकी रही। इस बीच आवास विकास ने दावा किया कि किसानों के साथ उनका विवाद सुलझ गया है, लेकिन 10 दिन बाद ही ठेकेदार को काम बंद करवाना पड़ा। वहीं, आवंटियों ने काम शुरू होने के बाद ठेकेदार पर आरोप लगाया था कि ढाई साल पहले जो सरिया लेकर ठेकेदार लाए थे, उसी से निर्माण कर रहे हैं। जबकि इस सरिये में रखे-रखे जंग लग चुका है। इससे लेंटर की गुणवत्ता भी खराब होगी। आवंटी असीम ने बताया कि प्लॉट संख्या 13 पर दोबारा लेंटर किया गया, लेकिन हर बार यह काम नहीं किया जा सकता है।

> खराब गुणवत्ता के काम की शिकायत मेरे पास नहीं है, लेकिन जो काम रुका हुआ है वह किसानों के विरोध के कारण रुका है। किसानों के साथ बैठक की जा रही है।
>
> -अजय मित्तल, सुपरिटेंडेंट इंजीनियर, आवास विकास

हैदराबाद में डायबिटीज से जुड़ी नई रिसर्च पर किया जाएगा मंथन

■ NBT न्यूज, गाजियाबाद : एमएमजी अस्पताल के फिजिशियन डॉ. आलोक रंजन डायबिटीज पर आयोजित होने वाली वर्ल्ड कांग्रेस में भाग लेने हैदराबाद जाएंगे। इस अंतरराष्ट्रीय स्तर की कांग्रेस में 13 फरवरी देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञ डायबिटीज से जुड़ी नई रिसर्च, आधुनिक उपचार पद्धतियों और रोकथाम के उपायों पर मंथन करेंगे। डॉ. आलोक रंजन ने बताया कि शुगर पर उनकी ओर से किए जा रहे कार्य को वह कांग्रेस में रखेंगे। इसके लिए उन्हें फेलोशिप अवॉर्ड के लिए भी आमंत्रित किया है। यह सम्मान 13 फरवरी को विशेष समारोह में प्रदान किया जाएगा। सेमिनार 13 से 15 फरवरी तक चलेगा।

> MMG के फिजिशियन डॉ. आलोक रंजन 13 को अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में लेंगे भाग

गौर ग्रीन विस्टा सोसायटी में फैली गंदगी

■ NBT रिपोर्ट, इंदिरापुरम

रविवार को निवासी निगम के अधिकारियों से मुलाकात करेंगे

न्याय खंड एक स्थित गौर ग्रीन विस्टा सोसायटी के पास सीवर लाइन का कार्य पूरा न होने से निवासियों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उनका कहना है कि जगह-जगह खुले गड्ढे हैं, जिन पर न तो बैरिकेडिंग है और न ही चेतावनी संकेतक। अंधेरे में ये गड्ढे दिखाई नहीं देते, जिससे किसी भी समय बड़ा हादसा हो सकता है। आरडब्ल्यूए जॉइंट सेक्रेटरी राकेश पांडे ने बताया कि सीवर कार्य के चलते पूरे इलाके में गंदगी फैली हुई है।

> जगह-जगह खुले गड्ढे होने से हर समय हादसों का बना डर

सोसायटी निवासियों का कहना है कि जिस रफ्तार और तरीके से काम किया जा रहा है, उससे यह स्पष्ट है कि यदि समय रहते सुधार नहीं हुआ तो यह कार्य मानसून तक अटक सकता है। इस समस्या को लेकर रविवार को गौर ग्रीन विस्टा के निवासी नगर निगम के अधिकारियों से मुलाकात करेंगे और अपनी समस्याओं को उनके सामने रखेंगे।

12 को मोदीनगर में निकाली जाएगी निशान यात्रा

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : श्री खाटू श्याम मित्र मंडल ट्रस्ट के तत्वावधान में दो दिवसीय फाल्गुन महोत्सव होगा। 12 फरवरी को निशान यात्रा और 13 को एकादशी संकीर्तन का आयोजन होगा। निशान यात्रा में 10 हजार से अधिक भक्तों के शामिल होने का अनुमान है। ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश गोयल ने बताया कि निशान यात्रा गोविंदपुरी शिवचौक से शुरू होकर दिल्ली-मेरठ मार्ग से होते हुए खाटू श्याम मंदिर महेंद्रपुरी कॉलोनी में संपन्न होगी। दो दिवसीय कार्यक्रम के चलते नंदकिशोर शर्मा श्री धाम वृंदावन, मनोज शर्मा ग्वालियर, साहिल शर्मा पानीपत, निष्ठा शर्मा, पूजा अरोड़ा, ईशा शर्मा, सिद्धांत राज और सीताराम शर्मा श्री श्याम का गुणगान करेंगे। ट्रस्ट के महामंत्री पंकज गोयल ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यमंत्री कपिल देव अग्रवाल, डॉ. सोमेंद्र तोमर, सुनील शर्मा, सांसद राजकुमार सांगवान, विधायक डॉ. मंजू शिवाच आदि मौजूद रहे।

सख्ती 18 को नोटिस, GDA ने स्वेच्छा से जमीन छोड़ने के लिए की कार्रवाई, पालन न होने पर अधिग्रहण किया जाएगा

हरनंदीपुरम योजना की राह में रोड़ा बने अवैध भट्ठे

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (GDA) की महत्वाकांक्षी हरनंदीपुरम योजना को विकसित करने की राह में अवैध ईंट-भट्ठे रोड़ा बने हुए हैं। यह प्रोजेक्ट मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण योजना का हिस्सा है, जिसे मार्च के अंत तक लॉन्च करने का लक्ष्य है। स्थिति यह है कि योजना के लिए कुल जमीन का लक्ष्य भी अधूरा है। जीडीए को करीब 100 हेक्टेयर जमीन और लेनी है। अब तक 70 हेक्टेयर का बैनामा हो चुका है और 151 हेक्टेयर पर सहमति बन चुकी है। जानकारों के अनुसार, इस रास्ते में सबसे बड़ी बाधा अवैध ईंट-भट्ठे हैं। जीडीए ने 18 ईंट-भट्ठों को नोटिस जारी किया है। इसका असर भी दिखने लगा है, जो भट्ठा मालिक जमीन देने में आनाकानी कर रहे थे, अब वे तैयार हो गए हैं। शासन से मिलने वाली अगली किस्त न फंसे, इसलिए सख्ती की है। एक तरफ सहमति से जमीन खरीदने की कोशिश जारी है, तो दूसरी तरफ उन किसानों और भू-स्वामियों के लिए अधिग्रहण का जाल भी बुना जा रहा है जो सहयोग नहीं कर रहे हैं।

किसानों की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

जीडीए ने कहा कि यदि सहमति के आधार पर जमीन मिलने में थोड़ी भी देरी हुई, तो तत्काल अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। इसका प्रस्ताव भी तैयार हो चुका है। अधिग्रहण की प्रक्रिया से किसानों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। यदि जमीन का बैनामा सीधे जीडीए के पक्ष में होता है, तो किसानों को तुरंत रकम मिल जाती है। अगर मामला अधिग्रहण में गया, तो मुआवजे के लिए सरकारी दफ्तरों और कचहरी के चक्कर काटने पड़ सकते हैं।

बजट संकट और CM योजना की डेडलाइन

हरनंदीपुरम योजना केवल जीडीए का प्रोजेक्ट नहीं है, बल्कि यह मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण योजना का एक प्रमुख हिस्सा है। शासन से निर्देश हैं कि योजना को मार्च के आखिरी हफ्ते तक हर हाल में लॉन्च कर दिया जाए। अगर जमीन हासिल करने में देरी हुई और लॉन्चिंग टली, तो बजट मिलने में दिक्कत आ सकती है। जीडीए अधिकारियों के मुताबिक, 100 हेक्टेयर जमीन के बिना योजना का खाका अधूरा है।

विजया अपार्टमेंट्स में वैलेंटाइन वीक पर ले रहे पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

■ NBT रिपोर्ट, इंदिरापुरम

अहिंसा खंड के विजय अपार्टमेंट में इस बार वैलेंटाइन वीक कुछ अलग और खास अंदाज में मनाया जा रहा है। सोसायटी की पंचतत्व टीम ने स्वाति गुप्ता के नेतृत्व में वैलेंटाइन-डे को प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण से जोड़ते हुए एक अनूठी पहल की है। इस पहल के तहत हर दिन एक नया पर्यावरण-आधारित चैलेंज दिया जा रहा है, जिसमें सोसायटी की महिलाओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। एओए अध्यक्ष संतोष सिंह ने बताया कि सप्ताह के हर दिन एक नया टास्क होता है और इस चैलेंज में हर वर्ग की महिलाएं भाग लेकर प्रकृति की रक्षा का संकल्प लेती हैं और उससे जुड़ी तस्वीरें साझा कर रही हैं। प्रतिदिन भेजी जाने वाली प्रकृति के प्रति प्रेम और क्रिएटिविटी की तस्वीरों के आधार पर वैलेंटाइन-डे वाले दिन बेस्ट तीन महिलाओं को पुरस्कृत और सम्मानित किया जाएगा। पंचतत्व टीम की इस सोच को सोसायटी के निवासियों की भरपूर सराहना मिल रही है। लोगों का कहना है कि इस पहल ने वैलेंटाइन-डे को केवल व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित न रखकर, प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी का एक नया आयाम दे दिया है।

CCI NG 3.7 Product: DelhiMasalamixBS PubDate: 11-02-2026 Zone: TIMSTHA Edition: 1 Page: HDTHAPG3 User: vikas.sharma@timesofindia.com Time: 02-10-2026 23:12 Color:

फटाफट खबरें

छात्रा से छेड़छाड़, थाने में दी तहरीर

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : एक कॉलोनी निवासी इंटर की 17 वर्षीय छात्रा के साथ छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। विरोध पर छात्रा के साथ अभद्रता भी की गई। कॉलोनी निवासी एक व्यक्ति ने बताया कि एक सप्ताह से तीन युवक छात्रा का पीछा कर रहे हैं। आरोपी अभद्र कमेंट के साथ छेड़छाड़ करते हैं। मंगलवार दोपहर जब छात्रा ट्यूशन जा रही थी तो आरोपियों ने छेड़छाड़ की। घर पहुंचकर छात्रा ने आपबीती सुनाई। इसके बाद परिजनों ने थाने में तहरीर दी। एसीपी मोदीनगर ने बताया कि आरोपियों की तलाश की जा रही है। जांच के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

कॉलेज से लौट रहे छात्र को पीटा

■ NBT न्यूज, मोदीनगर : कॉलेज से घर लौट रहे 18वीं के छात्र को छह युवकों ने मारपीट कर घायल कर दिया। छात्र की तरफ से कोतवाली में तहरीर दी गई है। दैल मिल कॉलोनी निवासी कर्ण डॉ. केएन मोदी साइंस एंड कॉमर्स कॉलेज में छात्र है। कर्ण ने बताया कि मंगलवार दोपहर कॉलेज से लौट रहा था। इसी दौरान छह आरोपी उसे रेलवे स्टेशन की तरफ ले गए और मारपीट की। बेहोश होने पर आरोपी फरार हो गए। राहगीरों ने कर्ण की मदद की। इसके बाद छात्र ने कोतवाली में पहुंचकर पुलिस को सूचना दी। एसीपी मोदीनगर भास्कर वर्मा का कहना है कि रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

नाली की सफाई के दौरान मिला भ्रूण

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : खोड़ा में थापर गेट के पास नाली की सफाई करते समय कर्मियों को भ्रूण मिला। उन्होंने पुलिस को सूचना दी। जांच में पुलिस को कोई ठोस जानकारी नहीं मिली है। एसीपी इंदिरापुरम अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि डायल 112 पर सोमवार को सूचना मिली थी। पुलिस जब मौके पर पहुंची तब भ्रूण पड़ा हुआ मिला। चिकित्सकीय जांच के अनुसार भ्रूण चार माह का बताया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच चल रही है।

FIR के विरोध में एसीपी का घेराव

■ NBT रिपोर्ट, मोदीनगर : बार असोसिएशन मोदीनगर के सचिव नकुल त्यागी के खिलाफ दर्ज एफआईआर के मामले में मंगलवार को वकीलों ने हड़ताल कर एसीपी का घेराव किया। एसीपी ने दो दिन में निष्पक्ष जांच करा कार्रवाई का आश्वासन दिया है। वकीलों ने अनिश्चितकालीन धरना शुरू कर रजिस्ट्री कार्य ठप करने की चेतावनी दी है। पिछले दिनों असोसिएशन के सचिव नकुल त्यागी के खिलाफ कोतवाली में धोखाधड़ी से बैनामा कराने में रिपोर्ट दर्ज हुई है।

AIMIM के महानगर अध्यक्ष नजरबंद

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : एआईएमआईएम (ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन) के महानगर अध्यक्ष मनमोहन गामा को मंगलवार को पुलिस ने उनके कार्यालय पर नजर बंद किया। मनमोहन झा गामा ने बताया कि मेरठ में पैगाम ए इत्तेहाद कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उन्हें प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली से शिष्टाचार भेंट करने के लिए जाना था। अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा टीएचए के अध्यक्ष पंडित नितिन शर्मा को सोमवार देर रात नजरबंद कर लिया।

सेवानिवृत्त अधिकारी से 1.11 करोड़ की ठगी में एक अरेस्ट

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

शेयर ट्रेडिंग में निवेश कर मुनाफा दिलाने का झांसा देकर डिफेंस के रिटायर्ड अफसर से 1.11 करोड़ रुपये की ठगी में गिरोह के एक शातिर को साइबर क्राइम थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के पास से एक मोबाइल बरामद किया। उससे पूछताछ में पांच राज्यों में सात लोगों से हुई करीब सवा तीन करोड़ रुपये की ठगी की घटनाओं का खुलासा हुआ है।

डिफेंस से रिटायर्ड गाजियाबाद राजनगर एक्सटेंशन में रहने वाले शिवराज सिंह यादव से 1.11 करोड़ रुपये की ठगी की थी। पुलिस ने 9.4 लाख रुपये रिफंड कर वापस कराए। एडीसीपी क्राइम पीयूष सिंह ने बताया कि 2025 में राजनगर एक्सटेंशन निवासी शिवराज सिंह यादव के साथ शेयर ट्रेडिंग में निवेश कर मुनाफा कमाने के नाम पर साइबर ठगी की गई थी। उन्हें एक वॉट्सऐप ग्रुप में जोड़ा गया, जहां फर्जी शेयर ट्रेडिंग वेबसाइट और ऐप के जरिए निवेश के लिए प्रेरित कर एक करोड़ 11 लाख 10 हजार रुपये ठगे थे। जांच के बाद इंदिरापुरी राजीव गार्डन निवासी मोहम्मद नदीम को दस फरवरी को खोड़ा क्षेत्र से गिरफ्तार किया है। हाल में वह दिल्ली शाहदरा के बिहारी कॉलोनी में रहता है।

फर्जी फर्म के नाम पर खुलवाया था बैंक खाता

नदीम ने बताया कि अंकित और अरुण नाम के दो शख्स ने गेमिंग प्लैटफॉर्म के माध्यम से होने वाली साइबर ठगी के बारे में बताया था। गेमिंग से जुड़ी रकम विभिन्न खातों में आएगी और बदले में उसे पांच प्रतिशत कमीशन मिलेगा। इसके बाद उसने देव लॉजिस्टिक नाम से एक फर्जी फर्म बनाई और एक निजी बैंक में करंट अकाउंट खुलवाया। इस खाते की चेकबुक, डेबिट कार्ड और इंटरनेट बैंकिंग की आईडी व पासवर्ड अंकित और अरुण को दे दिए थे, जबकि खाते से लिंक मोबाइल नंबर नदीम के पास था। खाते में होने वाले ट्रांजेक्शन के ओटीपी वह दोनों को उपलब्ध कराता था, जिससे बड़ी रकम को इधर-उधर किया जाता था। एसीपी क्राइम अमित सक्सेना का कहना है कि अंकित और अरुण की तलाश की जा रही है।

पांच राज्यों के सात लोगों से 3.29 करोड़ रुपये ऐंठ लिए थे

आरोपी को खोड़ा से गिरफ्तार किया है

आरोपी शेयर ट्रेडिंग के नाम पर राजनगर एक्सटेंशन में रहने वाले शख्स को लगाया था चूना

आरोपी पास से एक मोबाइल फोन किया बरामद, फर्जी फर्म के नाम पर करंट अकाउंट खुलवाया

जांच में सामने आया है कि गिरोह ने उत्तर प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, गुजरात और तमिलनाडु के लोगों से भी ठगी की है। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के आशीष चौधरी से 5.41 लाख और रचना चौधरी से 95 हजार रुपये की ठगी की। पुणे में श्रीनिवास प्रसाद से 12 लाख, आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के एम. जहीर से 8.5 लाख, गुजरात के भावनगर में बोरिचा परेश भाई से 71.85 लाख रुपये और तमिलनाडु के चेन्नै सीसीबी क्षेत्र के एम. महेंद्रन से 1.19 करोड़ रुपये की साइबर ठगी की थी। इनका खुलासा हुआ है। आगे की कार्रवाई की लिए संबंधित राज्यों की पुलिस से संपर्क किया जा रहा है।

अग्रिम कार्रवाई के लिए राज्यों से किया जा रहा संपर्क

जूलरी शोरूम में चोरी का भंडाफोड़, सेल्स मैनेजर निकला मास्टरमाइंड

4 आरोपी अरेस्ट, 26 से अधिक वारदात को दिया अंजाम

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

गाजियाबाद के जूलरी शोरूम, ऑफिस और घरों में चोरी करने वाले अंतरराज्यीय गैंग का क्राइम ब्रांच की स्वाट टीम ने भंडाफोड़ करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गैंग का मास्टर माइंड एक जूलरी शोरूम में सेल्स मैनेजर है। दिल्ली के जूलरी शोरूम में चोरी के बाद जेल जाने के दौरान उसने तीन बदमाशों को गैंग में शामिल कर लिया।

मास्टरमाइंड ने जेल में बदमाशों से दोस्ती कर बनाया अंतरराज्यीय गिरोह

आरोपियों ने अपने नाम रोशन यादव निवासी ग्राम गोपाल चक जिला गाजीपुर, निमिष अग्रवाल निवासी मोतीबाग बुलंदशहर, रघु निवासी प्रहलाद विहार रोहिणी दिल्ली और अमन सक्सेना निवासी आवास विकास कॉलोनी हापुड़ बताए हैं। बदमाशों ने बताया कि एक फरवरी को राजनगर में एक कोठी से तिजोरी चोरी की थी। पांच फरवरी को अंबेडकर रोड पर तनिष्क और दीपाली ज्वैलर्स शोरूम में चोरी का प्रयास किया था। इसी रात साहिबाबाद क्षेत्र में एसपीएस अपार्टमेंट सोसायटी के फ्लैट से एक लाख रुपये नकद के अलावा लाखों के जेवर और कीमती सामान चुराया था। आरोपियों से फ्लैट से चोरी जेवर और चेकबुक और पासपोर्ट, वारदात में प्रयुक्त गाड़ी बरामद की गई है।

आरोपियों से गहने और एक कार बरामद की गई

जेल में रची साजिश

पूछताछ में निमिष ने बताया कि कुछ समय पूर्व तनिष्क शोरूम में सेल्स मैनेजर था। इसके बाद एक शोरूम से जूलरी चोरी कर ली थी। उसे जेल भेजा गया था। जेल में रघु और प्रेम के साथ शोरूम में चोरी की साजिश रची थी।

आरोपियों पर कई केस

रघु के खिलाफ गाजियाबाद, नोएडा और दिल्ली में 26, निमिष अग्रवाल के खिलाफ गाजियाबाद और बुलंदशहर में चार, रोशन के खिलाफ तीन और अमन सक्सेना के खिलाफ तीन केस दर्ज हैं।

"आरोपियों ने साहिबाबाद, कविनगर और सिहानी गेट थाना क्षेत्र में चोरियां की थी। इन घटनाओं का खुलासा करने के लिए स्वाट टीम को लगाया था, जिसमें हम सफल रहे। करीब दो दर्जन से अधिक घटनाओं का खुलासा हुआ है। - **पीयूष सिंह, एडीसीपी, क्राइम ब्रांच**

हिंदू युवक को मुस्लिमों ने दिया कंधा

■ NBT रिपोर्ट, हापुड़ : थाना हापुड़ देहात क्षेत्र के एक मोहल्ले में रहने वाले युवक की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। मुस्लिम समुदाय के युवकों ने उसकी अर्थी को कंधा देकर एकता का परिचय दिया। मोहल्ला कोटला सादात निवासी अर्जुन की पास स्थित रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई थी। मृतक के परिजनों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए मुस्लिम युवकों ने मदद का हाथ बढ़ाया। उन्होंने अंतिम संस्कार की तैयारियों में भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल अर्थी को कंधा दिया, बल्कि अंतिम संस्कार में भी सहयोग किया। इस दौरान कई लोग मौजूद रहे।

गहने और नकदी चोरी रिश्तेदार पर शक, केस

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए

इंदिरापुरम के प्रह्लादगढ़ी के एक मकान से लाखों के गहने और नकदी चोरी का मामला सामने आया है। मकान मालिक दिल्ली से वापस लौटा, तो चोरी का पता लगा। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने 9 फरवरी को केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मूलरूप से इटावा निवासी राहुल ने दर्ज केस में बताया कि वह इंदिरापुरम थानाक्षेत्र के प्रह्लादगढ़ी में धर्मेंद्र शर्मा के मकान में किराए पर रहते हैं। 27 दिसंबर को वह अपने भतीजे के साथ दिल्ली गया था। अगले दिन शाम को वह वापस लौटा तो मकान का ताला टूटा हुआ था और अंदर सारा सामान बिखरा हुआ पड़ा था। पीड़ित का कहना है कि घर से सोने की चेन, अंगूठी, मंगलसूत्र, पायल, झाले और हजारों की नकदी गायब थी। पीड़ित की सूचना पर पहुंची पुलिस ने छानबीन की, लेकिन चोर का सुराग नहीं लगा। पीड़ित का कहना है कि उनके साथ उनका एक रिश्तेदार गौतम भी उस मकान में रहता है। चोरी की वारदात के बाद वह गायब है। उन्होंने रिश्तेदार पर चोरी का शक जताते हुए पुलिस को तहरीर दी है। एसीपी इंदिरापुरम अभिषेक श्रीवास्तव का कहना है कि केस दर्ज कर लिया गया है। सीसीटीवी कैमरों को चेककर चोरों की तलाश किया जा रहा है।

पड़ोसियों ने महिला और परिवार से की मारपीट

■ NBT न्यूज, लोनी

दबंगई

- बिजली का केबल काटने का आरोप लगाते हुए आरोपियों ने मां और बेटियों को पीटा
- पीड़िता ने कोतवाली में दी तहरीर, शिकायत के आधार पर दो लोगों पर रिपोर्ट दर्ज

सभा गार्डन कॉलोनी में रहने वाली महिला ने पड़ोसियों पर मारपीट का आरोप लगाते हुए दो दबंगों के खिलाफ लोनी कोतवाली में तहरीर दी है। एसीपी लोनी सिद्धार्थ गौतम का कहना है कि शिकायत के आधार पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

सभा गार्डन कॉलोनी में रहने वाले राशिद ने बताया कि घर के बिजली के खंभे से आने वाले लोगों के केबल और बिजली की लाइन भी लटकी हुई है। आए दिन किसी न किसी की बिजली चली जाती है। छह फरवरी को उनकी पत्नी घर में काम कर रही थीं। इस दौरान पड़ोस में किसी की बिजली चली गई। पड़ोसी मूसा उर्फ आफताब और तालिब उनके घर पहुंचे और केबल काटने का आरोप लगाते हुए गाली-गलौज करने लगे। शोर सुनकर परिजन घर से बाहर आए और विरोध किया। इस पर दबंगों ने अपने साथियों को बुला लिया और पीड़ित की पत्नी के अलावा उसकी बहन फरजाना, बेटी नाजिया और बेटे समद के साथ मारपीट की। लोग इकट्ठा होने लगे तो दबंग जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। इसके बाद पीड़ित ने घटना की शिकायत पुलिस थाने में की।

बाइक सवार दंपती को ट्रक ने मारी टक्कर

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : साहिबाबाद में बाइक सवार दंपती को ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में दोनों घायल हो गए हैं। बेटी ने ट्रक नंबर के आधार पर आरोपी चालक के खिलाफ केस दर्ज कराया है। राजबाग कॉलोनी निवासी शेफाली ने बताया कि दो फरवरी को पिता राजेंद्र प्रसाद शर्मा और माता बाइक से ग्रेटर नोएडा से लौट रहे थे। साहिबाबाद सब्जी मंडी के पास ट्रक ने ओवरटेक करने के चक्कर में बाइक में टक्कर मार दी। इससे माता-पिता घायल हो गए। पिता के हाथ में फ्रैक्चर आया है। शेफाली ने ट्रक चालक के खिलाफ लिंक रोड थाने में तहरीर दी है। एसीपी के अनुसार, केस दर्ज कर चालक को तलाश किया जा रहा है।

SP आवास के पास कंपनी से 14 लाख की चोरी

■ NBT न्यूज, हापुड़

थाना हापुड़ क्षेत्र में एसपी आवास के पास बदमाशों ने प्राइवेट कंपनी के ऑफिस में घुसकर 14 लाख रुपये चोरी कर लिए। तीन चोर सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए हैं। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है।

तीन चोर कंपनी में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए

जानकारी के अनुसार, मेरठ रोड पर एसपी आवास के पास इंस्टाकार्ट सर्विस प्राइवेट लिमिटेड कंपनी का ऑफिस है। कर्मचारी हापुड़ के गांव दत्तोई निवासी राहुल शर्मा ने बताया कि सोमवार देर रात करीब साढ़े 12 बजे तीन चोर कार्यालय में घुसे। उन्होंने मुख्य दरवाजे का ताला तोड़ा और कैश रूम में रखी नकदी लेकर भाग गए। फुटेज पुलिस के हाथ लग चुकी है। घटना की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंच घटनास्थल का निरीक्षण किया। थाना देहात प्रभारी नीरज कुमार ने बताया कि मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

क्रिप्टो करंसी में निवेश के नाम पर हड़पे एक करोड़ 42 लाख

■ NBT न्यूज, लोनी

एक कंपनी के माध्यम से क्रिप्टो करंसी में निवेश करने पर 20 महीनों में रकम दोगुनी करने का झांसा देकर 41 लोगों से एक करोड़ 42 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। पीड़ितों ने मामले की शिकायत पुलिस कमिश्नर से की। एसीपी अंकुर विहार की जांच के बाद लोनी बॉर्डर पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

टीला शहबाजपुर गांव निवासी राकेश कुमार ने बताया कि करीब चार वर्ष पहले बागपत खिलौनपुरा थाना सिंघावली अहीर निवासी अजय कुमार से मुलाकात हुई थी। अजय ने बताया कि 20 महीने में रकम दोगुनी करने की बात कही। उसने पीड़ित को साहिबाबाद के होटल कंट्री इन में बुलाया। वहां अजय ने चार साथियों विनीत कुमार, सचिन कुमार, विनय और गोपाल से मिलवाया। आरोपियों ने एएसटी कॉइन क्रिप्टो करंसी के नाम से कंपनी चलाने और मुनाफे का झांसा दिया। इसके बाद रेफरल लिंक के माध्यम से रकम ट्रांसफर कराई। बाद में पता चला कि आरोपियों ने फर्जी वेबसाइट बनाकर 41 लोगों से दो वर्ष में करीब 1.42 करोड़ रुपये ठगे हैं। पुलिस जांच कर रही है।

न्यूजीलैंड में नौकरी के नाम पर रकम हड़पी

■ NBT रिपोर्ट, टीएचए : न्यूजीलैंड में नौकरी लगवाने का झांसा देकर एक युवक से हजारों रुपये ठग लिए गए। मेरठ के रोहटा निवासी दीपांशु त्यागी ने बताया कि एक जानकार ने आरोपी आशीष चौधरी के बारे में बताया था। आशीष का वैशाली सेक्टर-चार शिप्रा मॉल मेन मार्केट में अराहुल इंटरनैशनल के नाम से ऑफिस है। आशीष और उसके साथियों सिद्धार्थ चौधरी, द्वारिका सिंह और संजय सिंह ने न्यूजीलैंड में अच्छे पैकेज पर नौकरी लगवाने का झांसा देकर 40 हजार रुपये और पासपोर्ट ले लिया। आरोपियों ने उसे फर्जी ऑफर लेटर और वीजा थमा दिया। पीड़ित की शिकायत पर कौशांबी पुलिस ने चारों के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

शेयर में मुनाफे का झांसा दे साढ़े 35 लाख ठगे

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद : शेयर ट्रेडिंग में मुनाफा दिलाने का झांसा देकर गोविंदपुरम निवासी एक व्यक्ति से साइबर ठगों ने साढ़े 35 लाख रुपये ठग लिए। गोविंदपुरम निवासी मुकेश सिंह पी. ने बताया कि एक नवंबर 2025 को उनके नंबर पर माला तोडरवाल नाम की महिला ने संपर्क किया। उसने खुद को एसबीआई सिक्योरिटीज की रिलेशनशिप मैनेजर बताते हुए एनएसई ट्रेडिंग और आईपीओ में विशेष मुनाफे का झांसा दिया। उन्हें एक ग्रुप में जोड़ा, जिसके एडमिन माला तोडरवाल और सुरेश शुक्ला थे। उन्हें कई वेबसाइट पर लॉग-इन कराया। इसके बाद निवेश के नाम पर उनसे करीब 35 लाख 70 हजार रुपये ट्रांसफर करा लिए गए। एडीसीपी क्राइम पीयूष सिंह का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

फर्जी वसीयत बना एक करोड़ की मांगी रंगदारी

■ NBT रिपोर्ट, गाजियाबाद

कविनगर क्षेत्र रहने वाले व्यक्ति ने पूर्व कर्मचारी पर फर्जी वसीयत बनाने और एक करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने का आरोप लगाया है। मामले में शास्त्रीनगर ई-ब्लॉक निवासी दीपक अग्रवाल ने कोर्ट के आदेश पर थाने में राजबहादुर और अन्य के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

पीड़ित ने कोर्ट के आदेश पर एक नामजद समेत अन्य आरोपियों पर दर्ज कराया केस

शिकायत में पीड़ित दीपक अग्रवाल ने बताया कि नानी शकुंतला अग्रवाल की संपत्ति को लेकर 1993 में पारिवारिक समझौता किया गया था। समझौते के तहत निजी निवास वाले बंगले और उससे जुड़ी भूमि का आधा हिस्सा शकुंतला अग्रवाल और आधा हिस्सा उनकी पुत्री ऊषा अग्रवाल के नाम था। दीपक कहना है कि नानी की वसीयत में दर्ज था कि कानपुर स्थित मकान का आधा हिस्सा उनके और आधा हिस्सा उनकी पुत्री ऊषा अग्रवाल के नाम रहेगा। आरोप है कि राजबहादुर नामक व्यक्ति ने 18 मई 2011 की कथित पोस्ट-डेटेड वसीयत तैयार कर फर्जी हस्ताक्षर कर दिए।

राजबहादुर के पिता पहले उनके नाना-नानी के यहां घरेलू सहायक थे और सेवानिवृत्ति के बाद राजबहादुर खुद इस संपत्ति पर बतौर गार्ड तैनात था। आरोप है कि इसी दौरान राजबहादुर फर्जी वसीयत के आधार पर नगर निगम और न्यायालय में प्रार्थना-पत्र देकर संपत्ति पर अपना दावा ठोक दिया। विरोध पर राजबहादुर ने धमकी दी। साथ ही, विवाद निपटाने के लिए एक करोड़ रुपये की मांग की।

जेपी ग्रुप के 9 अधिकारियों के साथ 11 पर केस

■ NBT रिपोर्ट, नोएडा : जय प्रकाश असोसिएट्स (जेपी) ग्रुप के नौ अधिकारियों समेत 11 लोगों के खिलाफ ग्रेटर नोएडा जेपी ग्रीन्स टाउनशिप में धोखाधड़ी, फर्जी बिल्डिंग प्लान देने, जमीन पर अवैध कब्जा, निर्माण रुकवाने और मजदूरों से मारपीट का आरोप लगा है। पीड़ित को जमीन को खरीदने के बाद 46 लाख रुपये अधिक लगाने पड़े, इसके बाद भी उन्हें जमीन पर कब्जा नहीं मिल रहा है। उन्होंने कोर्ट में न्याय की गुहार लगाई, मामले में कोर्ट के आदेश पर फेज टू थाना पुलिस ने 11 लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दिया है। फेज टो के सी ब्लाक में रहने वाले सत्येंद्र नारायण द्विवेदी (70) ने पुलिस को बताया कि जेपी ग्रीन्स परियोजना के स्पोर्ट्स सिटी में उन्होंने जमीन खरीदी थी।

9वीं मंज़िल से गिरे मैनेजर की मौत

■ NBT रिपोर्ट, गुड़गांव

आईटी स्पेस पार्क में मंगलवार तड़के नौवीं मंजिल से गिरकर एक मैनेजर की मौत हो गई। मैनेजर जिस फ्लोर से गिरे, उसी पर संचालित कंपनी के ऑफिस में काम करते थे। घटना के वक्त वह नाइट शिफ्ट की ड्यूटी पर थे। घटना सुबह करीब 4:30 बजे की बताई जा रही है। सिक्योरिटी गार्ड ने मैनेजर का शव परिसर में देख पुलिस को सूचना दी।

झारखंड निवासी 34 साल के वरुण शंकर इसी टावर की नौवीं मंजिल पर स्थित एक कंपनी में काम करते थे। मंगलवार सुबह अचानक जोरदार आवाज सुनाई दी। परिसर में तैनात सिक्योरिटी गार्ड भागे तो उन्होंने युवक को जमीन पर देखा। पुलिस कंट्रोल रूम को सूचित किया गया, जिसके बाद वरुण को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी जान नहीं बच सकी। पुलिस ने बताया कि वरुण सोहना एरिया में किराए पर पत्नी के साथ रहते थे। आशंका है कि वरुण ने नौवीं मंजिल से कूदकर जान दी है।

गुड़गांव की घटना, गुत्थी सुलझाने में जुटी पुलिस

फिलहाल यह मामला पुलिस के लिए पहेली बना हुआ है। शुरुआती जांच में स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह स्यूसाइड का केस है या फिर वरुण गलती से नीचे गिरे। पुलिस हर पहलू से मामले की जांच कर रही है। घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया गया है, ताकि पता लगाया जा सके कि जिस वक्त वरुण गिरे, उस समय वहां कोई और मौजूद था या नहीं। सहकर्मियों के अनुसार, वरुण स्वभाव से शांत थे। अचानक हुई घटना से कंपनी के कर्मचारी स्तब्ध हैं। इस की भी जांच हो रही है कि क्या वरुण कुछ दिनों से मानसिक तनाव या काम के दबाव में थे।

फरीदाबाद में छेड़छाड़ के विरोध पर ड्राइवर की चाकू मार हत्या

■ NBT रिपोर्ट, फरीदाबाद : पल्ला थानाक्षेत्र के गिरदावर कॉलोनी में रहने वाले ड्राइवर जय सिंह (32) को लड़की से छेड़छाड़ का विरोध करना जान पर ही भारी पड़ गया। बदमाशों ने उन पर चाकुओं से ताबड़तोड़ वार कर हत्या कर दी। हमलावरों की संख्या चार से पांच बताई जा रही है। हत्यारोपी उसी कॉलोनी के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस ने मृतक के भाई की शिकायत पर हत्या का केस दर्ज कर लिया है। आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। गिरदावरी एन्क्लेव की गली नंबर 9 निवासी जय सिंह ड्राइवर थे। सोमवार दोपहर वह घर के पास पार्क में दोस्त सौरभ के साथ बैठे थे। इसी दौरान एक लड़का बहन के साथ कॉलोनी की ओर जा रहा था। पार्क में मौजूद कुछ युवक छेड़छाड़ करने लगे। इस पर जय सिंह ने छेड़छाड़ करने वाले युवकों को भगा दिया। इसके बाद आरोपियों ने वारदात को अंजाम दिया।

ज्ञान खंड में रेलिंग हो रही गायब

■ NBT रिपोर्ट, इंदिरापुरम : ज्ञान खंड में सड़क के डिवाइडर पर लगी लोहे की रेलिंग धीरे-धीरे गायब होती जा रही है। कई स्थानों पर रेलिंग पूरी तरह हट गई है, जिससे न केवल सड़क सुरक्षा पर खतरा बढ़ गया है, बल्कि डिवाइडर की मिट्टी सड़क पर फैलने लगी है। वहीं, स्थानीय निवासियों का कहना है कि सरकारी संपत्ति की सुरक्षा जरूरी है। कबाड़ीवाले और कई अज्ञात लोग रात में धीरे-धीरे लोहे की रेलिंग को काटकर चुरा लेते हैं।

घर बसा नहीं, चोर पहले आ गए...पज़ेशन से पूर्व 'खाली' किए 37 फ्लैट

■ NBT रिपोर्ट, गुड़गांव

शहर के सेक्टर-93 में स्थित मरीट प्लाजा सोसायटी में गजब की वारदात हो गई। यहां अभी फ्लैट्स का निर्माण चल रहा है। कुछ फ्लैट फुली फर्निश्ड हैं। परिवारों को पजेशन मिलना बाकी है, लेकिन इससे पहले ही यहां चोर आ पहुंचे। सोसायटी के 37 फ्लैटों से करीब 40 लाख का सामान चुरा लिया। तीन आरोपी पकड़े गए तो पता चला कि यहां से 37 एसी, 13 एलईडी टीवी, तीन फ्रिज, दो माइक्रोवेव चोरी कर सारा सामान एक गोदाम में रख लिया गया था। आरोपियों ने सोचा था कि जल्दी ही यह सामान बेच देंगे, लेकिन इससे पहले सभी पकड़े गए। सेक्टर-93 चौकी इंचार्ज एसआई प्रदीप कुमार की टीम ने आरोपियों से करीब 40 लाख रुपये के सामान के अलावा एक पिकअप गाड़ी भी बरामद की है।

आरोपियों में दो कबाड़ खरीदते हैं, तीसरा पिकअप चालक है

40 लाख रुपये की चोरी की, सामान बेचने से पहले पकड़े गए : अरेस्ट किए गए आरोपियों में साने आलम निवासी बरेली और ताराचंद निवासी बदायूं, यूपी हैं। साने आलम और सारीक गुड़गांव में कबाड़ खरीदने का काम करते हैं, जबकि ताराचंद पिकअप चालक है। आरोपियों ने पूछताछ में स्वीकार किया कि उन्होंने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर चोरी की साजिश रची थी। सामने आया कि आरोपियों ने बड़ी चालाकी से वारदात की। आरोपियों ने पहले सोसायटी के फ्लैट्स से सामान निकाला और उसे वहीं बेसमेंट में इकट्ठा कर लिया। इसके बाद 5 और 6 फरवरी की रात को ताराचंद की पिकअप गाड़ी में सारा सामान लादकर मानेसर स्थित एक कबाड़ी के गोदाम में पहुंचा दिया। आरोपी इस सामान को बेचने की फिराक में थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें दबोच लिया।

कैग के पूर्व अधिकारी को छह घंटे डिजिटल अरेस्ट कर 2 करोड़ ठगे

■ NBT रिपोर्ट, फरीदाबाद : सेक्टर-64 सी में रहने वाले एक रिटायर्ड कैग (Comptroller and Auditor General of India) अधिकारी को साइबर ठगों ने करीब 6 घंटे तक 'डिजिटल अरेस्ट' में रख उनके खाते से 2 करोड़ 16 लाख रुपये ट्रांसफर करवा लिए। ठगों ने डराने के लिए मुंबई क्राइम ब्रांच में दर्ज फर्जी एफआईआर की कॉपी भी वॉट्सऐप पर भेजी। साथ ही अधिकारी की पत्नी के बैंक खाते को मनी लॉन्ड्रिंग से जोड़ते हुए गिरफ्तारी और जांच के नाम पर रकम जमा कराने का दबाव बनाया। ठगी का अहसास होने पर पुलिस को शिकायत दी।

पत्नी के मोबाइल पर आया था कॉल : सेक्टर-64 सी निवासी सीनियर सिटीजन ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 13 जनवरी को उनकी पत्नी के मोबाइल पर कॉल आया। उसने खुद को टेलिकॉम विभाग का अधिकारी बताते हुए कहा कि उनके आधार कार्ड से जुड़े एक बैंक खाते में नरेश गोयल नामक व्यक्ति से 20 लाख रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग की रकम आई है। ठगों ने 30 को सुप्रीम कोर्ट के नाम से एनओसी और फीरसी लेटर भेज मनी लॉन्ड्रिंग केस से बरी किए जाने का दावा किया।

AI Image

गलत तरीके से रकम मंगवाने का आरोप

पीड़ित अधिकारी ने बताया कि ठगों ने कथित सबूत होने का दावा किया और कहा कि गलत तरीके से कमाई गई रकम उनके खाते में मंगवाई गई है। डर के कारण पत्नी ने फोन पति को दे दिया। इसके बाद ठगों ने खुद को मुंबई क्राइम ब्रांच का अधिकारी बताते हुए वॉट्सऐप विडियो कॉल शुरू की। मोबाइल को लगातार फुल चार्ज पर रखने के निर्देश दिए।

घर से बाहर न जाने की दी धमकी

पीड़ित अधिकारी ने बताया कि ठगों ने वॉट्सऐप पर पत्नी के नाम का एटीएम कार्ड, नरेश गोयल के नाम से जुड़े दस्तावेज, मुंबई क्राइम ब्रांच, सीबीआई और ईडी के कथित कागजात भेजे। इन दस्तावेजों में पत्नी के बैंक खाते को मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल बताया गया। करीब 2 करोड़ रुपये के लेन-देन का जिक्र किया गया। कहीं बाहर न जाने की दी धमकी।

प्रेग्नेंसी में बढ़ती शुगर को लेकर रहें अलर्ट

indiapicture

प्रेग्नेंसी में बढ़ती शुगर (जेस्टेशनल डायबिटीज) के मामले बढ़ रहे हैं, लेकिन सही जांच, खानपान और देखभाल से मां-शिशु दोनों सुरक्षित रह सकते हैं। ऐसे में क्या करना है और क्या नहीं, एक रिपोर्ट:

Saroj.Dhuliya@timesofindia.com

प्रेग्नेंसी के दौरान ब्लड शुगर बढ़ना यानी जेस्टेशनल डायबिटीज आज कई महिलाओं में देखने को मिल रही है। हालांकि सही समय पर जांच, संतुलित खानपान, नियमित व्यायाम और डॉक्टर की सलाह से इसे अच्छी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, सही मैनेजमेंट अपनाने पर मां और शिशु दोनों सुरक्षित रह सकते हैं और स्वस्थ डिलीवरी संभव है।

जेस्टेशनल डायबिटीज आमतौर पर प्रेग्नेंसी के 24-28 हफ्तों में विकसित होती है

प्रेग्नेंसी में क्यों बढ़ती है शुगर?

दिल्ली डायबिटीज एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार झिंगन बताते हैं कि कई महिलाओं को गर्भधारण से पहले डायबिटीज नहीं होती, लेकिन प्रेग्नेंसी के दौरान जांच में शुगर बढ़ी हुई मिलती है। इसे जेस्टेशनल डायबिटीज कहते हैं। इसलिए इस दौरान नियमित टेस्ट बहुत जरूरी है। फिजिशियन डॉ. संजय महाजन के अनुसार, गर्भावस्था में प्लेसेंटा से बनने वाले हार्मोन इंसुलिन के काम में बाधा डाल सकते हैं। इससे शरीर में इंसुलिन रेजिस्टेंस बढ़ता है और ब्लड शुगर का स्तर बढ़ने लगता है।

मां-बच्चे पर असर!

प्रेग्नेंसी के दौरान लगातार शुगर का बढ़ा रहना मां-बच्चे के लिए परेशानी बन सकता है। डॉ. अशोक कुमार झिंगन कहते हैं, 'अगर गर्भावस्था में शुगर लंबे समय तक बढ़ी रहे, तो मां और शिशु दोनों को नुकसान हो सकता है। डिलीवरी में दिक्कत, हाई ब्लड प्रेशर या सिजेरियन की संभावना बढ़ जाती है। डॉ. संजय महाजन बताते हैं, 'मां के खून में ज्यादा ग्लूकोज प्लेसेंटा के जरिए गर्भ में बच्चे तक पहुंचता है। इससे बच्चा सामान्य से बड़ा हो सकता है, जिससे बच्चे की डिलीवरी में मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। जन्म के बाद बच्चे में लो शुगर, सांस की दिक्कत या पीलिया जैसी समस्याएं दिख सकती हैं। हालांकि समय पर पहचान और इलाज से इन जोखिमों को काफी कम किया जा सकता है। बस जरूरत है आपको अलर्ट रहने की।

किन महिलाओं को ज्यादा खतरा?

- परिवार में डायबिटीज की हिस्ट्री हो।
- घर में पहले जेस्टेशनल डायबिटीज रह चुकी हो।
- वजन ज्यादा हो या पीसीओडी की समस्या हो।
- बार-बार गर्भपात या प्रेग्नेंसी में दिक्कत रही हो।

बचाव कैसे करें?

- फाइबर-युक्त आहार (हरी सब्जियां, साबुत अनाज) ज्यादा लें।
- रोज व्यायाम या वॉक करें।
- वजन कंट्रोल में रखें।
- डॉक्टर की सलाह से शुगर टेस्ट कराएं।
- जरूरत हो, तो इंसुलिन या दवा लें।
- पर्याप्त नींद लें और तनाव से बचें।

AI Image

बच्चे को हो स्क्रीन की लत, तो सही दिशा देना जरूरी

AI Image

आज के डिजिटल दौर में बच्चों का स्क्रीन की ओर आकर्षित होना सामान्य है, लेकिन ज्यादा स्क्रीन टाइम उनकी सेहत, व्यवहार और सामाजिक विकास पर असर डाल सकता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, सिर्फ स्क्रीन से रोकना काफी नहीं, बल्कि उन्हें अच्छे और क्रिएटिव ऑप्शन देना ज्यादा जरूरी है।

- **पॉजिटिव डायरेक्शन देना जरूरी:** दिल्ली स्थित सीके बिड़ला हॉस्पिटल में डायरेक्टर (नियोनेटोलॉजी और पीडियाट्रिक्स) डॉ. पूनम सिदाना बताती हैं कि जब बच्चों में स्क्रीन की लत के संकेत दिखें, तो बार-बार रोकने के बजाय उन्हें वैकल्पिक गतिविधियों की ओर प्रेरित करें। जैसे स्क्रीन मत देखो कहने के बजाय चलो बाहर खेलते हैं, किताब पढ़ते हैं या साथ में कोई गेम खेलते हैं, कहना ज्यादा असरदार होता है। बच्चे इस तरह की भाषा को जल्दी समझते हैं।
- **स्क्रीन टाइम को समझना जरूरी:** सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि बच्चा दिन में कितना समय स्क्रीन पर बिताता है, क्या देखता है और स्क्रीन बंद होने पर उसका व्यवहार कैसा रहता है। यही जानकारी आगे सही योजना बनाने में मदद करती है।
- **घर में तय करें स्क्रीन नियम:** डॉ. सिदाना के अनुसार, घर में एक रूटीन होना जरूरी है। स्क्रीन टाइम की सीमा तय करें और डाइनिंग टेबल या बेडरूम जैसी जगहों को 'नो स्क्रीन जोन' बनाएं। पैरेंट्स खुद भी उदाहरण पेश करें, क्योंकि बच्चे वही सीखते हैं, जो घर में देखते हैं।
- **विकल्प और एक्टिविटी बढ़ाएं:** बच्चों को खेलकूद, ड्राइंग, पजल, किताबें, हॉबी या फ्री प्ले जैसे विकल्प देना जरूरी है। न्यूक्लियर फैमिली में 3-4 परिवार मिलकर बच्चों के लिए प्ले ग्रुप बना सकते हैं, जिससे बच्चों को सोशल और भावनात्मक जुड़ाव का मौका मिलता है और स्क्रीन पर निर्भरता कम होती है।
- **कारण समझना भी जरूरी:** साइकोलॉजिस्ट अर्चना माहेश्वरी के अनुसार, बच्चे कई बार बोरियत, अकेलापन, खेलने की जगह की कमी या माता-पिता के व्यस्त रहने के कारण ज्यादा स्क्रीन की ओर आकर्षित होते हैं। इन वजहों को समझना ही सही समाधान की शुरुआत है।
- **धीरे-धीरे बदलती है आदत:** स्क्रीन की लत कम करना एकदम से संभव नहीं होता। जागरूकता, नियमित दिनचर्या, सकारात्मक सहयोग और परिवार के साथ से बच्चे स्क्रीन का संतुलित व स्वस्थ इस्तेमाल सीख सकते हैं।

Advertorial, Entertainment
Promotional Feature

Enterटेनमेंट masalamix

मीरा के साथ हर दिन वैलेंटाइंस डे मनाता हूं: शाहिद

उपमा सिंह

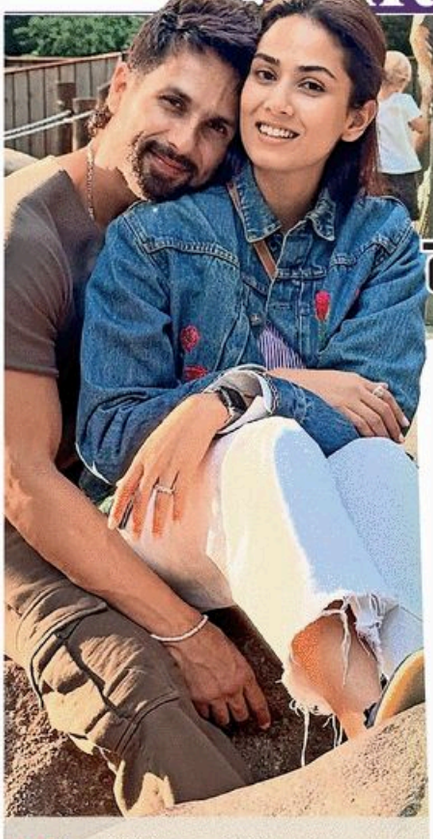

इश्क विश्क जैसी रोमांटिक फिल्म से अपना ऐक्टिंग करियर शुरू करने वाले ऐक्टर शाहिद कपूर इन दिनों अपनी जुनूनी प्रेम कहानी वाली गैंगस्टर ड्रामा ओ रोमियो को लेकर चर्चा में हैं। शाहिद की यह फिल्म वैलेंटाइंस डे पर रिलीज हो रही है, पर शाहिद खुद प्यार के लिए कोई एक दिन तय नहीं मानते। उनका कहना है कि वह अपनी पत्नी मीरा के साथ हर रोज वैलेंटाइंस डे मनाते हैं।

रोज याद दिलाता हूं, मीरा कितनी स्पेशल हैं

नवभारत टाइम्स से खास बातचीत के दौरान शाहिद ने शादी को 10 साल बाद वैलेंटाइंस डे की अहमियत पर बात करते हुए कहा, 'मैं अपनी बीवी के साथ रह दिन वैलेंटाइंस डे मनाता हूं। मेरा मानना है कि वह इतनी स्पेशल हैं कि मुझे हर दिन उन्हें याद दिलाना चाहिए कि वो मेरे लिए कितनी मायने रखती हैं।'

असल जिंदगी में लोग ग्रे ही होते हैं

करियर के शुरुआत में चॉकलेटी बॉय वाली इमेज रखने वाले शाहिद ने कमीने, उड़ता पंजाब, हैदर जैसी फिल्मों में ग्रे किरदारों में मनमूक छाप छोड़ी है। ओ रोमियो में भी वह गैंगस्टर हुसैन उस्तरा की ग्रे भूमिका में हैं। ऐसे रोल पर वह कहते हैं, 'इस तरह की भूमिकाएं हमें बतौर ऐक्टर खुद को खोजने का मौका देती हैं। मुझे लगता है कि जिंदगी में लोग ग्रे ही होते हैं। कई बार लोग अपने बारे में यह बात नहीं मानते, लेकिन उनके दोस्त और रिश्तेदार बताते हैं। कभी उनके बच्चे बड़े होकर बताते हैं कि आपने ऐसा किया था, वैसा किया था। हम सब वैसे होते हैं। हम सभी के अंदर एक ग्रे साइड होता है। जैसे विशाल सर (फिल्ममेकर विशाल भारद्वाज) हमेशा कहते हैं और मुझे भी ऐसे ही लगता है कि फिल्मों में किरदार खुद को एक्सपोज करता है। वह आपको अपनी सच्चाई दिखाता है। मैं कितना अच्छा हूं, ये बताने वाला करैक्टर करना ऐक्टिंग नहीं होती है। वो कुछ और होता है। ऐक्टिंग वही होती है, जब आप करैक्टर के हर पहलू को ऑडियंस को दिखाने से कतराते नहीं हैं। वो अच्छा-बुरा जो है, उसे ईमानदारी से दिखा देते हैं और मुझे लगता है कि आज ऑडियंस इतनी मैच्योर है कि वह इस चीज को सराहती है।'

फिल्में एक्सप्रेस करने का जरिया

कई ऐक्टर्स ये भी कहते हैं कि जो चीजें वे रियल लाइफ में नहीं कर सकते, उसे पर्दे पर दिखाने में एक अलग लुत्फ होता है। शाहिद इस पर कहते हैं, 'मेरी ऐक्टर बनने की वजह यह नहीं थी कि मैं जो चीजें असल जिंदगी में नहीं कर सकता, वह पर्दे पर करना है तो मुझे ऐक्टर बनना है। मुझे फिल्मों और ऐक्टिंग से मोहब्बत थी, अभी भी है। मुझे लगता है कि ऐक्टिंग में आपको एक मौका मिलता है अपने आपको एक्सप्लोर करने का, जिंदगी में जो भी आपने अनुभव किए हैं, उसे एक्सप्रेस करने का। क्रिएटिव लोग जो होते हैं, उन्हें एक जरिया मिल जाता है उसे एक्सप्रेस करने का। हमारे (क्रिएटिव लोगों के) लिए एक्सप्रेस करना जरूरी होता है।'

> मैं अपनी बीवी के साथ रह दिन वैलेंटाइंस डे मनाता हूं। मेरा मानना है कि वह इतनी स्पेशल है कि मुझे हर दिन उन्हें याद दिलाना चाहिए कि वो मेरे लिए कितनी मायने रखती है।

जो फिल्में दर्शकों के दिलों को छूती हैं, वे याद रह जाती हैं

देवदास से लेकर लैला मजनू और कबीर सिंह तक, इश्क में खुद को तबाह करने वाली जुनूनी प्रेम कहानियां बॉलिवुड फिल्मों में काफी देखी जाती हैं। क्या असल जिंदगी में प्यार इस कदर जुनूनी होता है या बॉलिवुड इसे रोमांटिसाइज ज्यादा करता है? इस सवाल पर शाहिद का कहना है, 'जो चीजें आक्रामक होती हैं, वो ज्यादा उभरकर आती हैं। हर चीज का एक असर होता है। फिल्मों के मामले में भी ऐसा ही है। जो फिल्में ज्यादा गहरी होती हैं, भावनात्मक रूप से मजबूत होती हैं, वे अंदर तक जाकर आपके दिल को चीरकर आपको कुछ फील करा देती हैं। हल्की फुल्की फिल्मों में वह बात महसूस नहीं होती। हल्की फुल्की फिल्में देखकर कुछ टाइम बाद आप उसे भूल जाते हैं। जबकि, कुछ ऐसी फिल्में होती हैं जो अंदर तक आपको छू जाती हैं, गहराई वाला अनुभव देती हैं। आपके मन में एक छाप छोड़ जाती हैं, इसलिए वे आपको ज्यादा याद रह जाती हैं।'

'आमिर, शाहरुख और सलमान के अंदाज जुदा, पर जूनून एक'

सलमान, आमिर और शाहरुख खान के साथ काम करने के अपने अनुभव एक बातचीत में रानी मुखर्जी ने साझा किए हैं। उन्होंने बताया कि तीनों सुपरस्टार्स का काम करने का अंदाज भले अलग है, पर सिनेमा के लिए उनका जुनून एक जैसा है। रानी ने 1998 में आई फिल्म गुलाम में आमिर खान के साथ काम किया था। उन दिनों को याद करते हुए रानी ने कहा कि आमिर हर सीन और हर शॉट को लेकर बहुत सीरियस रहते हैं। मुताबिक रानी, उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में आमिर से प्रोफेशनलिज्म और परफॉर्मेंस की बारीकियां सीखीं। शाहरुख के लिए उन्होंने कहा, 'वे बेहद संवेदनशील और केयरिंग इंसान हैं। मैं जब बहुत छोटी थी, तब भी शाहरुख ने मुझे हमेशा एक बच्चे की तरह प्रोटेक्ट किया। आज भी शाहरुख मुझे प्यार से बेबी कहकर बुलाते हैं।' वहीं सलमान खान के साथ काम करने को रानी ने बिलकुल अलग अनुभव बताया। उनके मुताबिक, 'सलमान का स्टाइल बिंदास और कैजुअल है। देखने में लगता है कि वह बहुत रिलैक्स हैं, पर असल में वह अपने काम के लिए काफी मेहनत करते हैं। सलमान का स्वैग व हैंडसम पर्सनैलिटी उनकी मेहनत को

> भले ही आमिर, शाहरुख और सलमान का काम करने का तरीका अलग-अलग हो, लेकिन तीनों सिनेमा को लेकर बेहद पैशनेट हैं और यही बात उन्हें खास बनाती है। तीनों के साथ काम करके मैंने कुछ न कुछ सीखा है।

राजपाल यादव को काम देंगे सोनू सूद

@sonu_sood

राजपाल यादव एक पुराने चेक बाउंस मामले में तिहाड़ जेल में हैं। अब सोनू सूद उनकी मदद के लिए आगे आए हैं। सोनू ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'राजपाल एक बेहद टैलेंटेड ऐक्टर हैं जिन्होंने इंडस्ट्री को कई यादगार किरदार दिए हैं। कभी-कभी जिंदगी टैलेंट की वजह से नहीं, बल्कि हालात के चलते मुश्किल हो जाती है।' सोनू ने यह भी ऐलान किया कि राजपाल उनकी आने वाली फिल्म का हिस्सा होंगे। 'खबरों के मुताबिक, राजपाल ने तिहाड़ जेल में सरेंडर करते हुए कहा था, 'सर, क्या करूं? मेरे पास पैसे नहीं हैं। यहां सब अकेले हैं, कोई दोस्त नहीं होता।' वहीं गुरमीत चौधरी व तेज प्रताप यादव ने ऐक्टर की मदद की पेशकश की है।

NOTE : -

[: राजस्थान पत्रिका , दैनिक जागरण delhi, नवभारत टाइम्स delhi, अमर उजाला delhi, हिन्दुस्तान delhi, Pioneer hindi delhi, जनसत्ता delhi,]

English NEWSPAPERS
[Times Of India delhi, Indian Express delhi, The Hindu delhi, Financial Express delhi, economic times delhi , the Pioneer english delhi , the tribune delhi] ETC.

We are providing all news paper pdf hindi and English want to read daily newspapers by pdf please msg me on telegram

2. आकाशवाणी (AUDIO)

whatsapp Group ka link pane ke liye Newspaper_pdf_bot par jaye.

Click here to contact:-https://t.me/Newspaper_pdf_bot
Or type in Search box of Telegram
@Newspaper_pdf_bot And you will find a channel
BACKUP GROUP LINK
https://t.me/joinchat/5P9EL1JaqoYzNTI1

Hindi-English News Paper Website:- onlineftp.in